विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्याय 2

विधिवत प्रक्रियाओं में तकनीकी शब्द

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
दिशा-निर्धारण 1
परिभाषा 1
शब्द और अवधारणाएँ 2
सामान्य प्रयोग में भाषा 2
पवित्रशास्त्र की भाषा 3
आवश्यकता 6
अनेक शब्द – एक अवधारणा 7
एक शब्द – अनेक विचारधाराएँ 8
स्थान 9
निर्माण 10
बाइबल आधारित शब्द 10
एक शब्द पर बल देना 11
एक अर्थ पर बल देना 11
नए अर्थों की रचना करना 12
बाइबल से बाहर की भाषा 13
सामान्य शब्दावली 13
दर्शनशास्त्रीय शब्दावली 14
संयोजित शब्दावली 15
मूल्य और खतरे 16
मसीही जीवन 17
वृद्धि 17
रूकावट 18
समुदाय में सहभागिता 19
वृद्धि 20
रूकावट 20
पवित्रशास्त्र की व्याख्या 21
वृद्धि 22
रूकावट 23
उपसंहार 24

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्याय दो

विधिवत प्रक्रियाओं में तकनीकी शब्द

परिचय

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि लगभग प्रत्येक व्यवसाय के लोग, हर प्रकार की नौकरियों में काम करने वाले मजदूर, एक दूसरे से बात करने के अपने ही तरीकों को ढूँढ लेते हैं? वे ऐसे शब्द और वाक्य बना लेते हैं जो उनके लिए विशेष अर्थ रखते हैं, फिर चाहे दूसरे उन्हें समझ भी न पाएँ कि उनका अर्थ क्या है। चिकित्सक, वकील, कार मकैनिक, किसान, मिस्त्री – चाहे कोई भी काम करने वाले हों; हम कई बार एक दूसरे से बात करने के विशेष तरीके, यहाँ तक कि तकनीकी तरीके भी ढूंढ लेते हैं।

कई रूपों में, विधिवत धर्मविज्ञान में भी ऐसा ही होता है। विधिवत धर्मविज्ञानी अपने धर्मविज्ञान की रचना विशेष प्रकार की शब्दावलियों से करते हैं। वे तकनीकी शब्दों के द्वारा एक-दूसरे के साथ बातचीत करने के अपने तरीके बना लेते हैं।

यह विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करने की हमारी श्रृंखला का दूसरा अध्याय है, एक ऐसी श्रृंखला है जिसमें हम यह खोज रहे हैं कि प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञानी विधिवत धर्मविज्ञान की रचना कैसे करते हैं। हमने इस अध्याय का शीर्षक "विधिवत प्रक्रियाओं में तकनीकी शब्द" दिया है, और इस अध्याय में हम कुछ ऐसे तरीकों को देखेंगे जिनमें विशेष शब्द और वाक्य विधिवत धर्मविज्ञानियों को अपना कार्य पूरा करने में योग्य बनाते हैं।

हमारा अध्याय तीन मुख्य भागों में विभाजित होगा। पहला, हम विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्दों की ओर सामान्य दिशा-निर्धारण को देखेंगे, अर्थात् वे क्या हैं और विधिवत प्रक्रियाओं में उनका क्या स्थान है। दूसरा, हम तकनीकी शब्दों की रचना या बनाए जाने की खोज करेंगे, अर्थात् कैसे विधिवत धर्मविज्ञानियों ने बातों के कहने के अपने विशेष तरीकों को ढूँढा है। और तीसरा, हम विधिवत प्रक्रियाओं में तकनीकी शब्दों के मूल्य और खतरों की खोज करेंगे, अर्थात् उन तरीकों की जो विधिवत धर्मविज्ञान की रचना करने के हमारे प्रयासों को बढ़ाते या रोकते हैं। आइए, तकनीकी शब्दों के मूल दिशा-निर्धारण से आरंभ करें।

दिशा-निर्धारण

इस विषय के व्यापक दृष्टिकोण के लिए, हम चार विषयों को देखेंगे। पहला, हम यह परिभाषित करेंगे कि तकनीकी शब्दों से हमारा क्या तात्पर्य है। दूसरा, हम तकनीकी शब्दों और धर्मवैज्ञानिक अवधारणाओं के बीच के संबंध को स्पष्ट करेंगे। तीसरा, हम विधिवत प्रक्रियाओं में तकनीकी शब्दावलियों के प्रयोग की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित करेंगे। और चौथा, हम विधिवत धर्मविज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया में तकनीकी शब्दों के स्थान का वर्णन करेंगे।

परिभाषा

जब हम पहले-पहल विधिवत धर्मविज्ञान का अध्ययन करना आरंभ करते हैं, तो जल्द ही यह स्पष्ट हो जाता है कि हमें विधिवत धर्मविज्ञानियों की भाषा सीखना आवश्यक है। विधिवत धर्मविज्ञानी अक्सर ऐसे शब्दों और वाक्यांशों का प्रयोग करते हैं जिनका हम सामान्यतः प्रयोग नहीं करते। और यहाँ

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तक कि जब वे रोजमर्रा के जीवन के शब्दों का प्रयोग करते हैं, तो भी वे उनका प्रयोग अक्सर असामान्य रूपों में करते हैं। बातों को कहने के इन विशेष तरीकों को ही अक्सर "धर्मविज्ञान-संबंधी तकनीकी शब्द" कहा जाता है। हमारे उद्देश्यों के लिए, हम धर्मविज्ञान-संबंधी तकनीकी शब्दों की परिभाषा "धर्मविज्ञान में विशेष अर्थ रखने वाले शब्दों और वाक्यांशों" के रूप में दे सकते हैं।

कई बार, विधिवत धर्मविज्ञानी तकनीकी शब्दों को प्रयोग किसी एक बात का दूसरी बात से अंतर स्पष्ट करने के लिए करते हैं। उदाहरण के लिए, वाक्यांश "परमेश्वर-विज्ञान" (THEOLOGY PROPER) परमेश्वर या उसके बारे में अध्ययन को दर्शाता है। यह परमेश्वर के स्व-अस्तित्व, उसकी सर्वश्रेष्ठता आदि पर ध्यान केंद्रित करता है। इसके विपरीत, शब्द "धर्मविज्ञान" अपने आप में परमेश्वर के विषय में किसी भी अध्ययन की सामान्य श्रेणी को दर्शाता है, जैसे कि मनुष्यजाति, पाप और उद्धार की धर्मशिक्षा।

कई बार तकनीकी शब्द जटिल विषयों को एक शब्द या वाक्यांश में संक्षिप्त करने के सुविधाजनक तरीकों को भी प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए, तकनीकी शब्द "त्रिएकता" केवल एक शब्द होते हुए भी बड़ी सुविधा के साथ परमेश्वरत्व की विस्तृत शिक्षाओं का सार प्रस्तुत कर देता है। धर्मवैज्ञानिक विचार-विमर्श में "त्रिएकता" का उल्लेख करना इसकी अपेक्षा कहीं सरल है कि हर बार इस धर्मशिक्षा के विवरणों को स्पष्ट किया जाए। जैसा भी हो, धर्मविज्ञान-संबंधी तकनीकी शब्द ऐसे शब्द और वाक्यांश हैं जिनका धर्मविज्ञान में विशेष अर्थ होता है।

अब जबकि हमारे पास यह आधारभूत जानकारी है कि तकनीकी शब्द वास्तव में क्या हैं, इसलिए हमें अब एक अन्य विषय की ओर मुड़ना चाहिए : शब्दों और अवधारणाओं के बीच संबंध। जिन शब्दों का हम प्रयोग करते हैं और जिन विचारों या अवधारणाओं को ये शब्द व्यक्त करते हैं, उनके बीच क्या संबंध हैं? ये कैसे एक दूसरे से कैसे मेल खाते हैं?

शब्द और अवधारणाएँ

हम इस विषय को दो कोणों से देखेंगे : पहला, भाषा में सामान्य रूप से शब्दों और अवधारणाओं के बीच आपसी संबंध; और दूसरा, पवित्रशास्त्र की भाषा में शब्दों और अवधारणाओं के बीच संबंध। आइए पहले हम उन तरीकों को देखें जिनमें सामान्य रूप से शब्द और अवधारणाएँ एक दूसरे से संबंध रखते हैं।

सामान्य प्रयोग में भाषा

यदि आप अधिकांश लोगों से पूछें कि कैसे शब्द उन अवधारणाओं से संबंध रखते हैं जो उनके मन में है, तो शायद वे ऐसा कहें कि प्रत्येक शब्द जिसका वे प्रयोग करते हैं, उसका एक संबंधित विचार होता है। अधिकांश लोग ऐसा सोचते हैं कि शब्दों और अवधारणाओं के बीच एक बिल्कुल सीधा संबंध होता है।

यह देखना कठिन नहीं है कि लोग ऐसे क्यों सोचते हैं। जब हम छोटे बच्चों को अपने माता-पिता की भाषा सीखता हुआ देखते हैं, तो वे अक्सर लोगों, वस्तुओं और छोटे-मोटे कार्यों के नामों से सीखना आरंभ करते हैं। एक माता अपनी ओर संकेत करते हुए "मम्मी" कहती है, या फिर रोटी का एक टुकड़ा अपने हाथों में लेकर कहेगी, "रोटी"। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, बच्चे ज्यादा से ज्यादा शब्द सीखते जाते हैं, और वे इन शब्दों को ज्यादा से ज्यादा विचारों से जोड़ते हैं। द्वितीय भाषा को सीखने वाले व्यस्क लोग अक्सर ऐसी ही प्रक्रिया से आरंभ करते हैं जब वे शब्द-शब्द करके एक नई भाषा सीखते हैं। इन प्राथमिक स्तरों पर, यह सत्य है कि हम अक्सर एक शब्द को एक अवधारणा के साथ जोड़ते हैं।

परंतु जब हम इसके बारे में सोचना बन्द कर देते हैं, तो शब्दों और विचारों के बीच का संबंध बहुत जटिल होता है। हम इन कुछ जटिलताओं का सार दो सरल कथनों में प्रस्तुत कर सकते हैं। एक ओर, बहुत से शब्द एक अवधारणा को दिखा सकते हैं। और दूसरी ओर, एक शब्द कई अवधारणाओं को दिखा सकता है। आइए इस विषय के दोनों पहलुओं को देखें, हम इस तथ्य के साथ आरंभ करेंगे कि बहुत से शब्द एक अवधारणा को दर्शा सकते हैं।

यह देखना वास्तव में कठिन नहीं है कि हम अक्सर कई शब्दों का प्रयोग एक विचार को व्यक्त करने के लिए करते हैं। उदाहरण के लिए, मेरी एक बेटी है जिस का नाम बैकी है। और किसी के साथ वार्तालाप करते हुए, मैं उसका उल्लेख "बैकी," "मेरी बेटी," "वॉरेन की पत्नी," "मैगी की माँ," "लिली की माँ," "मेरी बच्ची," "मेरी इकलौती बच्ची" के रूप में कर सकता हूँ। इस सूची में और भी उल्लेख जोड़े जा सकते हैं। प्रत्येक विषय में, शब्दों के थोड़े से भिन्न अर्थ हैं परंतु वे सब मेरे जीवन में एक विशेष व्यक्ति की वही जटिल अवधारणा को दर्शाते हैं।

सामान्य भाषा में इस तरह की बातें बार-बार होती हैं। उन सारे तरीकों के बारे में सोचें जिनमें आप समुद्र का उल्लेख कर सकते हैं। उन शब्दों पर ध्यान दें जिनका प्रयोग आप किसी देश को दिखाने के लिए कर सकते हैं। संसार की प्रत्येक भाषा में अक्सर ऐसा ही होता है कि अनेक शब्द समान अवधारणा को व्यक्त करते हैं।

दूसरी ओर, यह भी सच है कि एक शब्द कई अवधारणाओं को दर्शा सकता है। इसे देखने के लिए, केवल अपनी भाषा के शब्दकोश को ही देख लीजिए। शब्दकोश में बहुत सी प्रविष्टियाँ दर्शाती हैं कि एक शब्द के कई अर्थ होते हैं। और ये अनेक परिभाषाएँ दर्शाती हैं कि एक शब्द कई भिन्न अवधारणाओं को दर्शाता है।

आइए हम रोजमर्रा की बातचीत से एक उदाहरण लें। अंग्रेजी के एक शब्द "बार" पर ध्यान दें। इस एक शब्द के कई भिन्न अर्थ हो सकते हैं। यह एक खम्बा, एक चट्टान, एक निषेध, वकीलों की एक पेशेवर संस्था, भोजन या पेय पदार्थ रखने वाला एक काउंटर और बहुत सी अन्य वस्तुएं हो सकता है। इसे कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है, इस बात पर आधारित होकर यह और अन्य शब्द कई भिन्न अवधारणाओं को व्यक्त कर सकते हैं।

अतः, भाषा के सामान्य प्रयोग में शब्दों और अवधारणाओं के बीच सदैव एक जैसा संबंध नहीं होता है। इसकी अपेक्षा, कई शब्द एक ही अवधारणा को दर्शा सकते हैं, और एक शब्द कई अवधारणाओं को दर्शा सकता है।

अब क्योंकि हमने भाषा के सामान्य प्रयोग में शब्दों और अवधारणाओं के आपसी संबंध के जटिल तरीकों को देख लिया है, इसलिए हमें उन तरीकों की ओर मुड़ना चाहिए जिनमें वे पवित्रशास्त्र की भाषा में संबंध रखते हैं। जब हम बाइबल के साथ व्यवहार करते हैं तो शब्द और अवधारणाएँ कैसे एक दूसरे से संबंध रखते हैं? क्या परिस्थिति भिन्न है? या क्या वह एक जैसी ही है?

पवित्रशास्त्र की भाषा

वास्तविकता तो यह है कि अधिकांश बाइबल साधारण भाषा में लिखी गई है। अतः, जैसे अनेक शब्द सामान्य भाषा में एक समान अवधारणा को दर्शा सकते हैं, वैसे ही अनेक शब्द बाइबल आधारित भाषा में भी एक ही अवधारणा को दर्शा सकते हैं। और जिस प्रकार साधारण भाषा में एक शब्द कई अवधारणाओं को दर्शा सकता है, उसी प्रकार एक शब्द बाइबल में भी कई अवधारणाओं को दर्शा सकता है। आइए पहले इस वास्तविकता की ओर मुड़ें कि पवित्रशास्त्र में कई शब्द एक ही अवधारणा को दर्शा सकते हैं।

भाषा के इस प्रयोग को देखने का एक सरल तरीका मसीही जीवन की अवधारणा को दर्शाने वाले बाइबल आधारित सभी शब्दों को देखना है। एक पल के लिए उन अनेक तरीकों पर ध्यान दें जिनमें

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

केवल एक लेखक प्रेरित पौलुस ने मसीही जीवन का उल्लेख किया है। 1 थिस्सलुनीकियों 4:3 में उसने इसे "पवित्रीकरण" कह कर पुकारा है। 1 कुरिन्थियों 4:17 में उसने इसे "विश्वासयोग्यता" के रूप में कहा है। रोमियों 16:19 में उसने मसीही जीवन को "आज्ञाकारिता" के रूप में भी उल्लिखित किया है। गलातियों 5:25 में उसने इसे "आत्मा में चलना" के वाक्यांश के रूप में दर्शाया है। और रोमियों 8:29 में उसने इसका वर्णन "पुत्र के स्वरूप" और 2 कुरिन्थियों 3:18 में "परिवर्तन" के रूप में किया है। इन सारे उदाहरणों में, पौलुस मूलत: एक ही विषय में बात कर रहा था : इसे हम "मसीही जीवन" कह सकते हैं।

पवित्रशास्त्र में और भी कई ऐसी अवधारणाएँ हैं जिनका विविध तरीकों से उल्लेख किया जाता है। उदाहरण के लिए, पवित्रशास्त्र में यीशु के सारे नामों के बारे में सोचें। केवल "यीशु" या "नासरी यीशु" के नामों के साथ बुलाए जाने के साथ-साथ उसे सामान्य रूप से मसीह या यूनानी में ख्रिस्टोस कह कर पुकारा जाता है, जो कि इब्रानी शब्द मशीआख़ का यूनानी अनुवाद है, अर्थात् "अभिषिक्त जन।" उसे सामान्यतः प्रेरितों के काम 1:21 में "प्रभु" और 2 पतरस 1:11 में "उद्धारकर्ता" कह कर बुलाया जाता है। इसके अतिरिक्त, बाइबल उसे तीतुस 2:13 में "परमेश्वर," यूहन्ना 1:1 में "वचन," 1 कुरिन्थियों 15:45 में "अन्तिम आदम," लूका 1:35 में "परमेश्वर का पुत्र," मत्ती 21:9 में "दाऊद की संतान," लूका 19:38 में "राजा," कुलुस्सियों 1:15 में "सारी सृष्टि में पहिलौठा" और 1 तीमुथियुस 2:5 में "मध्यस्थ" कह कर पुकारती है। निस्संदेह इन सभी शब्दों के अर्थ भिन्न-भिन्न हैं, परंतु ये शब्दों के ऐसे समूह के रूप में रहते हैं जो एक ही व्यक्तित्व अर्थात्, हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह, त्रिएकता के दूसरे व्यक्तित्व की ओर संकेत करते हैं। अतः हम देखते हैं कि सामान्य भाषा के समान पवित्रशास्त्र अक्सर एक अवधारणा का उल्लेख करने के लिए अनेक शब्दों का प्रयोग करता है।

दूसरी ओर, पवित्रशास्त्र एक ही शब्द का प्रयोग कई अवधारणाओं को दर्शाने के लिए भी करता है। कभी-कभी ये ऐसे साधारण शब्द और अवधारणाएँ होती हैं जिनका विधिवत धर्मविज्ञान में बहुत ही कम महत्व है। परंतु अक्सर पवित्रशास्त्र एक शब्द का प्रयोग विभिन्न अवधारणाओं को दर्शाने के लिए करता है, यहाँ तक कि तब भी जब ये अवधारणाएँ धर्मविज्ञान में बहुत ही महत्वपूर्ण हों। आइए पवित्रशास्त्र के दो शब्दों पर ध्यान दें जो विधिवत धर्मविज्ञान में एक केन्द्रीय भूमिका अदा करते हैं। पहले, हम शब्द "धर्मी ठहराए जाने" को देखेंगे, और दूसरा हम शब्द "पवित्रीकरण" को देखेंगे।

आइए उन शब्दों के समूह की मुड़ते हुए आरंभ करें जो नए नियम की यूनानी क्रिया डिकायो (*δικαιόω*) से संबंधित है : ऐसे शब्द जिनका अनुवाद हम अक्सर "धर्मी ठहराना," "धर्मी" और "धर्मी ठहराए जाने" के रूप में किया जाता है। नया नियम धर्मी ठहराए जाने के बारे में बहुत सी बातें कहता है, परंतु हमारे उद्देश्यों के लिए हम केवल दो ही पदों पर ध्यान देंगे :

पहला, रोमियों 3:28 में पौलुस ने इन शब्दों को लिखा है :

> **इसलिए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से अलग ही, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है (रोमियों 3:28)।**

इस पद में अनुवाद किया गया शब्द "धर्मी ठहराना" डिकायो से अनूदित है। यहाँ और कई अन्य अनुच्छेदों में पौलुस ने स्पष्ट रूप से डिकायो के बारे में इस रूप में कहा है जो मानवीय योग्यता के बिना "केवल विश्वास के द्वारा" होता है। इस भाव में, धर्मी ठहराना धर्मी होने की घोषणा है जो उस समय होती है जब मसीही मसीह को ग्रहण करते हैं और और मसीह की धार्मिकता उनमें जोड़ दी जाती है।

शब्द डिकायो का दूसरा उपयोग याकूब 2:24 में प्रकट होता है। वहाँ हम ऐसा पढ़ते हैं:

> **इस प्रकार तुम ने देख लिया है कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, वरन् कर्मों से भी धर्मी ठहरता है (याकूब 2:24)।**

यहाँ पर याकूब डिकायो, जिसका अनुवाद "धर्मी ठहराए जाने" के रूप में किया गया है, शब्द का इस्तेमाल पौलुस के रोमियों 3:28 के प्रयोग से बिलकुल भिन्न रूप से करता है। पौलुस ने कहा है कि धर्मी ठहराया जाना "व्यवस्था के कामों के बिना, विश्वास के द्वारा" होता है, परंतु याकूब ने कहा कि धर्मी ठहराया जाना "केवल विश्वास से ही नहीं वरन् कर्मों से" होता है।

रूचिकर बात यह है कि याकूब और पौलुस दोनों ने अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए अब्राहम का उदाहरण लिया। जब हम रोमियों 4:1-5 में पौलुस के अब्राहम के विचार-विमर्श को देखते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि उसने उत्पत्ति 15 की घटनाओं का उल्लेख किया, जब अब्राहम ने परमेश्वर में विश्वास किया था, और उसका यह विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना गया था। यह अब्राहम का आरंभिक रूप से धर्मी ठहराया जाना था, जब परमेश्वर ने उसे सबसे पहले केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराने की घोषणा की थी।

परंतु याकूब ने उत्पत्ति 22 की घटनाओं का उल्लेख किया जो उत्पत्ति 15 की घटनाओं के लगभग 30 वर्षों के पश्चात् घटित हुईं। उत्पत्ति 22 में परमेश्वर ने अब्राहम को परखा ताकि वह उसे मौरिय्याह पहाड़ पर उसके पुत्र इसहाक को बलिदान चढाने की आज्ञा देने के द्वारा उसके विश्वास को प्रमाणित करे। याकूब 2:23 कहता है कि इस तरह से अब्राहम का पहले का विश्वास "पूर्ण" हो गया। इस विषय में याकूब अब्राहम के धर्मी ठहराए जाने की आरंभिक घोषणा के बारे में नहीं, बल्कि उसकी धार्मिकता के "प्रमाण" या "सबूत" के बारे में बात कर रहा था।

अतः यह स्पष्ट है कि नए नियम के लेखकों ने यूनानी शब्द डिकायो को कम से कम दो भिन्न अर्थों में इस्तेमाल किया था।

अब जो कुछ हमने धर्मी ठहराए जाने के बारे में देखा है वह असामान्य नहीं है। उदाहरण के लिए, यूनानी क्रिया हागिआज़ो (*ἁγιάζω*) से संबंधित शब्दों के समूह पर ध्यान दें, जिनका अनुवाद अक्सर "पवित्र करना," "पवित्रीकरण," "पवित्र लोगों" और यहाँ तक कि "पवित्र" जैसे शब्दों में किया जाता है। शब्दों का यह समूह नए नियम में प्रयुक्त कई भिन्न अवधारणाओं को दर्शाता है। उदाहरण के द्वारा हम उन तीन भिन्न अवधारणाओं को देखेंगे जिन्हें एक लेखक, अर्थात् प्रेरित पौलुस ने इस एक शब्द के द्वारा दर्शाया है।

पहली, 1 कुरिन्थियों 6:11 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> **तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे (1 कुरिन्थियों 6:11)।**

इस अनुच्छेद में, पौलुस ने शब्द "पवित्र करना" या हागिआज़ो (*ἁγιάζω*) का प्रयोग कुछ ऐसी बात को दर्शाने करने के लिए किया जो परमेश्वर तब करता है जब कोई मसीह को ग्रहण करता है, जिसके द्वारा, वह व्यक्ति परमेश्वर के सम्मुख ग्रहणयोग्य बन जाता है और पाप से दूर हो जाता है। कभी-कभी इसे निर्णायक पवित्रता भी कहा जाता है। हम कह सकते हैं कि तात्कालिक संदर्भ में जिन अन्य शब्दों का वह प्रयोग करता है उनके द्वारा उसका यही अर्थ था। उसने कुरिन्थियों के विषय में कहा कि वे पापों से "धोए गए" अर्थात् शुद्ध हो गए, "पवित्र किए गए" अर्थात् परमेश्वर के सम्मुख पवित्र और ग्रहणयोग्य बनाए गए और "धर्मी ठहराए गए", अर्थात् विश्वास के द्वारा धर्मी घोषित किए गए। यहाँ "पवित्र किया जाना" उस आरंभिक पवित्रीकरण को दर्शाता है जो नए विश्वासी धर्मी घोषित किए जाने के समय प्राप्त करते हैं जब वे धर्मी बनाए जाते हैं और निर्णायक रूप से मसीह के साथ जोड़े जाते हैं।

दूसरा, शब्द "पवित्र ठहराया जाना" (या हागिआज़ो) 1 थिस्सलुनीकियों 4:3 में प्रकट होता है। वहाँ पौलुस ने ये शब्द लिखे :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> **परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो : अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो (1 थिस्सलुनीकियों 4:3)।**

इस अनुच्छेद में, पौलुस कुछ ऐसी बात का उल्लेख करता है जिनका अनुसरण विश्वासियों को करना चाहिए। कई बार इसे प्रगतिशील पवित्रता कहा जाता है। पौलुस ने स्पष्ट किया कि लैंगिक अनैतिकता से बचे रहने के साथ इसे जोड़ने के द्वारा पवित्र ठहराए जाने का क्या अर्थ है। यहाँ हागिआज़ो विश्वासियों द्वारा अपने जीवनभर पाप से बचे रहने की निरंतर चलने वाली प्रक्रिया का उल्लेख है।

तीसरे अनुच्छेद में, पौलुस ने शब्द हागिआज़ो का प्रयोग एक और ही रूप में किया। सुनिए 1 कुरिन्थियों 7:14 में उसने क्या लिखा है :

> **क्योंकि ऐसा पति जो विश्वास न रखता हो ,वह पत्नी के कारण पवित्र ठहरता है, और ऐसी पत्नी जो विश्वास नहीं रखती पति के कारण पवित्र ठहरती है; नहीं तो तुम्हारे बाल-बच्चे अशुद्ध होते, परंतु अब तो पवित्र हैं (1 कुरिन्थियों 7:14)।**

इस अनुच्छेद में, पौलुस ने हागिआज़ो के साथ संबंधित शब्दों के समूह का तीन बार प्रयोग किया जब उसने ऐसे परिवारों का वर्णन किया जिनमें विश्वासी और अविश्वासी जीवनसाथी थे। पहला, उसने कहा कि अविश्वासी पति अपनी विश्वासी पत्नी के कारण पवित्र हागिआज़ो ठहराया जाता है। दूसरा, उसने कहा कि अविश्वासी पत्नी के लिए भी यही बात लागू होती है। और तीसरा, उसने इस शब्द के विशेषण का प्रयोग करके कुरिन्थियों को यह स्मरण दिलाया कि ऐसे परिवारों के बच्चे "पवित्र" होते हैं या पवित्र ठहराए जाते हैं।

अब, पौलुस का यह अर्थ नहीं था कि परमेश्वर इन अविश्वासियों को अपने निमित ग्रहणयोग्य होने के लिए पाप से अलग करता है। न ही उसका यह अर्थ था कि विश्वासियों की संतान का उद्धार अपने आप हो जाता है। पौलुस के अन्य लेखनों से यह स्पष्ट है कि उद्धार के लिए उद्धारदायक विश्वास आवश्यक है। बल्कि पौलुस ने तो यहाँ उसका उल्लेख किया जिसे हम बिना उद्धार के पवित्रता कह सकते हैं, एक ऐसी अवधारणा कि एक ऐसे परिवार में पाए जाने वाले अविश्वासी या बच्चे जिसमें कम से कम माता-पिता में से एक सच्चा विश्वासी हो, इस भाव में पवित्र ठहरते हैं कि उस विश्वासी की उपस्थिति के कारण उन्हें बाकी संसार से अलग किया गया है। अतः हम देखते हैं कि पौलुस ने बाइबल आधारित शब्द हागिआज़ो का प्रयोग सच्चे विश्वासियों के आरंभिक अनुभव को, पवित्रता के निरंतर अनुसरण को, और उद्धारदायक विश्वास न होने के बावजूद भी कुछ अविश्वासियों के अलग होने को दर्शाने के लिए किया है।

अब जो हमने धर्मी ठहराए जाने और पवित्रीकरण के बारे में देखा है वही बाइबल में पाए जाने वाले बहुत से अन्य धर्मवैज्ञानिक रूप से महत्वपूर्ण शब्दों के विषय में भी लागू होता है। जैसे सामान्य भाषा में होता है, वैसे ही पवित्रशास्त्र का एक शब्द कई भिन्न अवधारणाओं को दर्शा सकता है। पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले शब्दों और अवधारणाओं के ये जटिल संबंध हमारे तीसरे विषय की ओर अगुवाई करते हैं, विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्दों और वाक्यांशों की आवश्यकता।

आवश्यकता

जब विद्यार्थी का पहली बार विधिवत धर्मविज्ञान से सामना होता है, तो वे उन तकनीकी शब्दों की उस लंबी सूची से घबरा जाते हैं जिन्हें उनको सीखना होता है। मैं आपको बता सकता हूँ कि बहुत बार मुझसे यह पूछा गया है , "हमें इन सब बातों को कहने के लिए इन सब विशेष तरीकों को सीखना क्यों आवश्यक है? हम इन बातों को उसी तरह से क्यों नहीं कह सकते जैसे बाइबल उन्हें कहती है?"

सच कहें तो, एक स्तर पर तकनीकी शब्दों की आवश्यकता नहीं होती। इनके बिना भी धर्मविज्ञान का अध्ययन करना, सीखना और सीखाना संभव है। परंतु दूसरे स्तर पर, तकनीकी शब्द धर्मविज्ञान की

ऐसी स्पष्ट पद्धति की रचना करने के लिए आवश्यक हैं जो सारे पवित्रशास्त्र को अपने में समा ले। क्योंकि बाइबल आधारित शब्दों और अवधारणाओं के बीच संबंध इतने अधिक हैं कि विधिवत धर्मविज्ञानियों ने विशेष तरह की शब्दावली को विकसित किया है जो कई बार कृत्रिम प्रतीत होती हैं, परंतु वह वार्तालाप को काफी स्पष्ट बना देती है।

समीकरण के दोनों पक्षों की स्पष्टता के लिए इस आवश्यकता को देखना सहायक होगा : सबसे पहले, हम उस असमंजस को देखेंगे जब कई शब्द एक ही अवधारणा को दर्शाते हैं; और दूसरा हम इस असमंजस के उन प्रकारों को देखेंगे जो तब उत्पन्न होते हैं जब एक शब्द बाइबल की कई अवधारणाओं को दर्शाता है। आइए सबसे पहले हम तकनीकी शब्दों की आवश्यकता को देखें जब बाइबल के बहुत से शब्द एक अवधारणा को दर्शाते हैं।

अनेक शब्द – एक अवधारणा

जैसा कि हम देख चुके हैं, बाइबल के लेखक ने अक्सर कई भिन्न अभिव्यक्तियों में एक समान मूल अवधारणा का उल्लेख करते हैं। अक्सर, यह तथ्य विधिवत धर्मविज्ञानियों के लिए उस स्पष्टता तक पहुँचना मुश्किल बना देता है जिस तक वे पहुँचना चाहते हैं। इसलिए विधिवत धर्मविज्ञानी अपने अर्थ को स्पष्ट करने के लिए तकनीकी शब्दों की रचना करते हैं। यह दिखाने के लिए यह कैसे कार्य करता है, आइए हम उस तरीके को खोजें जिसमें बाइबल कलीसिया की अवधारणा के बारे में बात करती है।

कलीसिया की धर्मशिक्षा पर बाइबल की शिक्षा को सामान्यतः "कलीसियाई धर्मविज्ञान" कहा जाता है। यह तकनीकी शब्द एक्लेशिया (*ἐκκλησία*) से आता है, जो "कलीसिया" के लिए नए नियम का यूनानी शब्द है। धर्मविज्ञानियों के एक ऐसे समूह की कल्पना कीजिए जो एक धर्मविज्ञानी समाज को उनके पसंद के एक विषय पर संबोधित करने आया हो। एक धर्मविज्ञानी शायद इस तरह से आरंभ करे : "आज मैं 'परमेश्वर के इस्राएल' की धर्मशिक्षा पर विचार-विमर्श करूँगा।" कोई दूसरा धर्मविज्ञानी ऐसे कह सकता है कि, "मैं 'परमेश्वर के मंदिर' की धर्मशिक्षा पर विचार विमर्श करूँगा।" और शायद कोई और या कहे, "मैं 'मसीह की देह' पर विचार-विमर्श करूँगा।"

निस्संदेह, यह तभी स्पष्ट नहीं होगा कि ये धर्मविज्ञानी किस विषय में बात करना चाहते हैं। आखिरकार, पवित्रशास्त्र में ऐसे वाक्यांश "इस्राएल का परमेश्वर," "परमेश्वर का मंदिर," "मसीह की देह" कलीसिया के अतिरिक्त कई अन्य बातों को भी दर्शा सकते हैं। "परमेश्वर का इस्राएल" का संबंध इस्राएल राष्ट्र से भी हो सकता है। "परमेश्वर का मंदिर" पुराने नियम के मंदिर को दर्शा सकता है। "मसीह की देह" यीशु की भौतिक देह को दर्शा सकता है। कौन इसे स्पष्टता से कह सकता है?

अब, इन सारे रूपों में कलीसिया के बारे में बात करने में कुछ भी गलत नहीं होगा। नया नियम कलीसिया की एक अवधारणा का उल्लेख इन और अन्य कई रूपों में करता है। फिर भी, यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि किस प्रकार का असमंजस ये कथन उत्पन्न कर सकते हैं। हम इस बात से आश्वस्त नहीं हो सकते कि इन धर्मविज्ञानियों ने समान विषयों पर भिन्न विषयों के पर बात करने की योजना बनाई है। इस असमंजस से बचने के लिए, विधिवत धर्मविज्ञानी कलीसिया पर आधारित बाइबल की शिक्षाओं के विचार-विमर्श के लिए अपने तकनीकी शब्द के रूप में "कलीसियाई धर्मविज्ञान" को स्वीकार करते हैं।

सरल शब्दों में कहें तो, असमंजस इसलिए उत्पन्न होता है क्योंकि बाइबल के शब्द एकसमान अवधारणा को दर्शाते हैं। परंतु इस असमंजस को तब दूर किया जा सकता है जब धर्मविज्ञानी अपने अर्थों को स्पष्ट करने के लिए तकनीकी शब्दों का प्रयोग करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

एक शब्द – अनेक विचारधाराएँ

विधिवत धर्मविज्ञानी उस असमंजस से बचने के लिए तकनीकी शब्दों की रचना करते हैं जो इस वास्तविकता के द्वारा उत्पन्न होता है जिनमें एक एकल शब्द या वाक्यांश पवित्रशास्त्र में कई भिन्न बातों का अर्थ दे सकता है। इसलिए, स्पष्ट वार्तालाप हेतु विधिवत धर्मविज्ञानी तकनीकी शब्दों के लिए बहुत ही विशेष, और अक्सर कृत्रिम रूप से संकीर्ण, परिभाषाएं विकसित करते हैं।

उदाहरण के लिए, उन तरीकों को देखें जिनमें हम विधिवत धर्मविज्ञान में "धर्मी ठहराए जाने" और "पवित्रीकरण" जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं। धर्मसुधार आंदोलन के समय, प्रोटेस्टेंटवादियों ने रोमन कैथोलिक धर्मविज्ञान के विपरीत औरडो साल्यूटिस (वह क्रम जिसमें उद्धार को लोगों पर लागू किया जाता है) का वर्णन करने के तरीके को विकसित किया। प्रोटेस्टेंट तकनीकी शब्दावली में, धर्मी ठहराया जाना धार्मिकता की आरंभिक घोषणा है जब परमेश्वर एक व्यक्ति में मसीह की धार्मिकता को जोड़ता है। धर्मी ठहराया जाना परमेश्वरप्रदत्त है, अर्थात्, यह परमेश्वर का कार्य है, और मनुष्य इसमें पूरी तरह से निष्क्रिय हैं। परंतु प्रोटेस्टेंटवादी औरडो साल्यूटिस में पवित्रीकरण को उस पवित्रता का अनुसरण करने की निरंतर प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है जो धर्मी ठहराए जाने के बाद मिलती है। इस भाव में, पवित्रीकरण केवल परमेश्वरप्रदत्त नहीं है, बल्कि सहक्रियाशील है, जिसमें न केवल परमेश्वर बल्कि मनुष्य की इच्छा भी सम्मिलित होती है। प्रोटेस्टेंटवादी धर्मविज्ञान में ये विशिष्टताएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं।

परंतु उन धर्मविज्ञानियों द्वारा पवित्रीकरण की धर्मशिक्षा को स्पष्ट करने की कल्पना करें जो "धर्मी ठहराए जाने" और "पवित्रीकरण" जैसे शब्दों का उन सभी तरीकों में प्रयोग करते हैं जो नए नियम में प्रकट होते हैं।

हम धर्मविज्ञानियों से बड़ी आसानी ये कहने की अपेक्षा कर सकते हैं, पहला, "पवित्रीकरण धर्मी ठहराए जाने के बाद होता है।" यह कथन उद्धार के प्रोटेस्टेंट क्रम में उपयुक्त बैठता है। परंतु ऐसे धर्मविज्ञानी जो प्रोटेस्टेंटवाद की तकनीकी शब्दावली को बनाए रखने की परवाह नहीं करते, यह भी कह सकते हैं, दूसरा, "पवित्रीकरण धर्मी ठहराए जाने के साथ साथ घटित होता है।" वे ऐसा इसलिए कह सकते हैं क्योंकि नया नियम शब्द पवित्रीकरण का प्रयोग आरंभिक पवित्रता को दर्शाने के लिए करता है जो एक व्यक्ति को तब दी जाती है जब वह धर्मी ठहराया जाता है। और वे धर्मविज्ञानी जो प्रोटेस्टेंटवाद की तकनीकी शब्दावली की परवाह नहीं करते हैं, ऐसा भी कह सकते हैं, तीसरा, "पवित्रीकरण धर्मी ठहराए जाने के बिना ही होता है।" वे ऐसा इसलिए कह सकते हैं क्योंकि नया नियम बच्चों और विश्वासियों के अविश्वासी जीवनसाथियों के पवित्रीकरण के बारे में बात करता है।

ये सारे कथन इस भाव में बाइबल पर आधारित हैं कि वे शब्दों का वैसे प्रयोग करते हैं जैसे बाइबल उनका प्रयोग करती है। परंतु यह देखना कठिन नहीं है कि कैसे ये कथन असमंजसपूर्ण हो सकते हैं। यदि हम एक ऐसे धर्मविज्ञानी को एक के बाद एक बिना स्पष्ट व्याख्या के ये सभी कथन कहते हुए सुनें तो स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठेंगे। कौनसा कथन सत्य है? पहली दृष्टि में, हम शायद यह कहेंगे कि ये सारे कथन परस्पर विरोधाभासी हैं।

इस अध्याय में बाद में, हम और अधिक विस्तार से देखेंगे कि विधिवत धर्मविज्ञानी कैसे इस तरह की समस्या का समाधान करते हैं। इस समय, हमारे लिए यह कहना ही पर्याप्त होगा कि विधिवत धर्मविज्ञानी इस तरह के असमंजस को विशेष या तकनीकी शब्दों का विकास करने के द्वारा दूर करने का प्रयास करते हैं जब वे पवित्रीकरण या धर्मी ठहराए जाने जैसे विषयों पर चर्चा करते हैं। वे इन शब्दों को सीमित रूपों में परिभाषित करते हैं जो उनके बनाए निरूपण को सीमित करते हैं।

अब क्योंकि हमने विधिवत प्रक्रियाओं में तकनीकी शब्दों की आवश्यकता को देख लिया है, इसलिए हमें अपना ध्यान उस स्थान की ओर लगाना चाहिए जो तकनीकी शब्द विधिवत धर्मविज्ञान में रखते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

स्थान

संक्षेप में कहें तो, तकनीकी शब्द विधिवत धर्मविज्ञान के मूल खंडों की रचना करते हैं। पहले के एक अध्याय में, हमने देखा था कि प्रोटेस्टेंटवादी विधिवत धर्मविज्ञान मध्यकालीन विद्वतावाद की पद्धतियों का अनुसरण करता है, जो कि विशाल रूप में अरस्तूवादी तर्क से प्रभावित था। इस संबंध में, विधिवत धर्मविज्ञान चार मुख्य चरणों में आगे बढ़ता है : पहला, यह शब्दों के लिए संक्षिप्त परिभाषाओं को विकसित करता है। दूसरा, यह इन शब्दों का प्रयोग कथनों की रचना करने के लिए करता है। तीसरा, यह इन कथनों का प्रयोग न्यायसंगत रूप में धर्मशिक्षारुपी कथनों की रचना करने में करता है। और चौथा, यह अपने तर्कों को धर्मशिक्षा की एक विवेकपूर्ण पद्धति में व्यवस्थित करता है। यद्यपि कोई भी विधिवत धर्मविज्ञान की रचना करते हुए कड़ाई से इस व्यवस्थित प्रक्रिया का अनुसरण नहीं करता, फिर भी यह रूपरेखा विधिवत प्रक्रियाओं के निर्माण की रणनीति को संक्षेप में दर्शाने का एक सहायक तरीका है।

हमने जो कहा उसे स्पष्ट करने के लिए आइए एक उदाहरण को देखें। कल्पना कीजिए कि कुछ विधिवत धर्मविज्ञानी मसीह की मृत्यु के विषय पर चर्चा करना चाहते हैं। सबसे पहले, वे पारंपरिक मसीही शब्दों से अपने शब्दों की रचना करेंगे। इस विषय में, हो सकता है कि कई विशेष अभिव्यक्तियाँ मुख्य स्थान ले लें जैसे कि “उद्धारविज्ञान” (उद्धार की शिक्षा), हिस्टोरिया साल्यूटिस (इतिहास में परमेश्वर द्वारा उद्धार का पूर्ण किया जाना), “प्रतिस्थापित प्रायश्चित” (यह विचार कि मसीह किसी के स्थान पर मरा जिस पर परमेश्वर ने अपने क्रोध को उंडेल दिया था), और “ओरडो साल्यूटिस” (वह क्रम जिसमें उद्धार एक व्यक्ति के जीवन में आता है)। वे ऐसे शब्दों का प्रयोग भी कर सकते हैं, जैसे “बचाने वाला विश्वास,” “पश्चाताप,” “क्षमा, और निस्संदेह “मसीह”।

दूसरा, किसी न किसी तरीके से, विधिवत धर्मविज्ञानी इन शब्दों को विशेष रूप से उन कथनों में शामिल करेंगे जो ऐसे तत्वों को व्यक्त करते हैं जिनमें पवित्रशास्त्र मसीह की मृत्यु के विषय में शिक्षा देता है। उदाहरण के लिए, वे ऐसी बातों को कह या सोच सकते हैं : “उद्धार दो महत्वपूर्ण उप-विषयों में विभाजित होता है : ओरडो साल्यूटिस औरहिस्टोरिया साल्यूटिस ।” “मसीह की मृत्यु विश्वासियों के बदले में एक प्रतिस्थापित प्रायश्चित थी।” “मसीह का प्रतिस्थापित प्रायश्चित ही एक व्यक्ति की क्षमा और उसके अनंत जीवन की एकमात्र आशा है।” “बचाने वाला विश्वास और पश्चाताप ओरडो साल्यूटिस के आवश्यक पहलू हैं।” ये और कई अन्य कथन मसीह की मृत्यु के धर्मविज्ञानी विचार-विमर्श के लिए प्रासंगिक तथ्यों को व्यक्त करेंगे।

तीसरा, विधिवत धर्मविज्ञानी अपने तकनीकी शब्दों और कथनों को एक धर्मशिक्षारूपी कथन में स्थापित करते हैं जब वे विशेष तथ्यों के बीच तार्किक संबंधों का अनुमान लगाते हैं। उदाहरण के लिए, वे ऐसा एक सार कह या लिख सकते हैं : “मसीह की मृत्यु के उद्धार-संबंधी महत्व को हिस्टोरिया साल्यूटिस और ओरडो साल्यूटिस में देखा जाना आवश्यक है। एक ओर, हिस्टोरिया साल्यूटिस, अर्थात् उद्धार का इतिहास मसीह की मृत्यु में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया था। उसकी मृत्यु पापों की अनंत क्षमा के लिए एक प्रतिस्थापित प्रायश्चित थी। दूसरी ओर, कोई भी व्यक्ति वास्तव में तब तक क्षमा प्राप्त नहीं करता और बचाया नहीं जाता, जब तक मसीह के प्रायश्चित के प्रभावों को ओरडो साल्यूटिस में उस पर लागू नहीं किया जाता। जब लोग क्षमा के लिए व्यक्तिगत रूप से बचाने वाले विश्वास और मसीह में भरोसे के द्वारा अपने पाप का पश्चाताप करते हैं, तो वे अनंत जीवन को प्राप्त करते हैं।”

अन्त में, मसीह के प्रायश्चित के बारे में ये तकनीकी शब्द, कथन और धर्मशिक्षारूपी कथन विधिवत धर्मविज्ञानियों की अगुवाई एक विशाल दृष्टिकोण की ओर करेंगे। वे मसीह की मृत्यु के प्रतिस्थापित प्रायश्चित पर अपने विचार-विमर्श को विधिवत धर्मविज्ञान की विशाल पद्धति से जोड़ेंगे और इस प्रकार इस तरह के प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करेंगे। मसीह की मृत्यु किस प्रकार उद्धार-विज्ञान के व्यापक चित्र में उपयुक्त बैठती है? उद्धार-विज्ञान किस प्रकार परमेश्वर-विज्ञान, मानव-विज्ञान, कलीसियाशास्त्र, और युगान्त-विज्ञान से संबंध रखता है?

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विधिवत धर्मविज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया को देखना कुछ हद तक बनावटी ही है। वास्तविक प्रक्रिया में ये सारे चरण परस्पर बहुत अधिक निर्भर हैं और परस्पर आदान-प्रदान के बहुत से जालों का निर्माण करते हैं। जब धर्मविज्ञानी वास्तव में विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करते हैं, तो वे हर समय इन चारों चरणों में शामिल रहते हैं। परंतु उस क्रम की परवाह किए बिना जिसमें धर्मविज्ञानी वास्तव में कार्य करते हैं, यह विषय फिर भी बना रहता है कि तकनीकी शब्द विधिवत धर्मविज्ञान के अधिकांश मूल खंडों या इकाइयों का निर्माण करते हैं।

अब क्योंकि हमने धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्दों के सामान्य दिशा-निर्धारण को स्थापित कर लिया है, इसलिए हमें इस अध्याय के दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ना चाहिए : तकनीकी शब्दों का निर्माण। कैसे विधिवत धर्मविज्ञानी उन विशेष अभिव्यक्तियों की रचना करते हैं, जिनका वे प्रयोग करते हैं?

निर्माण

मुझे अभी भी याद है जब सेमीनरी का एक हताश विद्यार्थी कक्षा के बाद मेरे पास आया। उसने मुझे देखा और कहा। मैं बहुत वर्षों से मसीही हूँ, परंतु आप जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं उनमें से आधे भी मेरी समझ में नहीं आते। आपको ये सारे अपरिचित शब्द कहाँ से मिलते हैं? मैंने उसे देखा और उससे कहा, "जिन अधिकांश शब्दों को मैं प्रयोग करता हूँ वे मेरे अपने नहीं हैं। मैंने इन्हें विधिवत धर्मविज्ञानियों से प्राप्त किया है।" और तब उसने मुझे फिर से देखा और कहा, "ठीक है, तो मुझे बताइए कि उन्हें ये शब्द कहाँ से मिले।"

यह स्पष्ट था कि तकनीकी शब्दावली जिनका प्रयोग हम सेमीनरी में करते हैं इस व्यक्ति की समझ से परे थे और उसने मुझसे एक बहुत अच्छा प्रश्न पूछा था। विधिवत धर्मविज्ञान में ये सारे विशेष शब्द कहाँ से आए हैं?

वास्तव में, विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्दों की रचना कई तरीकों से की जाती है। इनके विकसित होने के कुछ मुख्य तरीकों की खोज करने के लिए हम दो दिशाओं में देखेंगे। पहला, हम यह देखेंगे कि विधिवत धर्मविज्ञान में बहुत से तकनीकी शब्द बाइबल आधारित शब्दों से आते हैं। और दूसरा, हम देखेंगे कि कई अन्य तकनीकी शब्द वास्तव में बाइबल आधारित स्रोतों के बाहर से आते हैं। आइए सबसे पहले हम कुछ ऐसे तरीकों को देखें जिनमें विधिवत धर्मविज्ञानी अपनी विशेष शब्दावली की रचना बाइबल पर आधारित होकर करते हैं।

बाइबल आधारित शब्द

अधिकांश मसीही बहुत राहत अनुभव करते हैं जब धर्मविज्ञानी अपने धर्मविज्ञान में बाइबल आधारित अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते हैं। हम चाहते हैं कि हमारा विधिवत धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं के प्रति सच्चा हो। अतः तब बहुत राहत अनुभव होती है जब धर्मविज्ञानी बाइबल जैसा ही बोलते प्रतीत होते हैं। फिर भी, हमें यह महसूस करना चाहिए कि तकनीकी शब्दावली के रूप में बाइबल आधारित शब्दावाली का प्रयोग धर्मविज्ञान में करना उतना सरल नहीं है, जितना यह प्रतीत होता है।

विधिवत धर्मविज्ञानी वास्तव में कम से कम तीन रूपों में पवित्रशास्त्र से तकनीकी शब्दों की रचना करते हैं : पहला, बाइबल-आधारित किसी शब्द पर बाइबल-आधारित अन्य शब्दों से अधिक बल देने के द्वारा जो कि एक ही जैसी अवधारणा को व्यक्त करते हैं; दूसरा, बाइबल-आधारित शब्द के किसी अर्थ पर उसी बाइबल-आधारित शब्द के अन्य अर्थों से अधिक बल देने के द्वारा; और तीसरा, बाइबल-

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आधारित शब्दों के नए अर्थों की रचना करने के द्वारा, अर्थात् ऐसे अर्थों की जो पवित्रशास्त्र में कभी प्रकट नहीं होते। इन तीनों दृष्टिकोणों का विस्तार से अध्ययन करना उपयोगी होगा। इसलिए आइए उन तरीकों के साथ आरंभ करें जिनमें विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल-आधारित एक शब्द पर दूसरे शब्दों से अधिक बल देते हैं।

एक शब्द पर बल देना

जैसा कि हम देख चुके हैं, बाइबल लेखक अक्सर एक ही विचार को दर्शाने के लिए एक से अधिक अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते हैं। अपने विचार-विमर्श में स्पष्टता लाने के लिए विधिवत धर्मविज्ञानी निरंतर कई शब्दों में से एक शब्द को चुनते हैं जो तकनीकी शब्द के रूप में पवित्रशास्त्र की एक अवधारणा को दर्शाता है, और वे फिर इसी तकनीकी शब्द का पूरी तरह से प्रयोग करते हैं।

हमारे अर्थ को स्पष्ट करने के लिए, हम नए जीवन की धर्मशिक्षा को देखेंगे। विधिवत धर्मविज्ञान में "नया जीवन" एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग परमेश्वर के उस कार्य के वर्णन के लिए किया जाता है जिसके द्वारा नया आत्मिक जीवन किसी व्यक्ति को दिया जाता है। यह पहले परिवर्तन या बदलाव को दर्शाता है जो एक व्यक्ति में तब होता जब वह पाप और मृत्यु में से निकलकर मसीह में नए जीवन में प्रवेश करता है।

पवित्रशास्त्र में बहुत से शब्द इस अवधारणा को दर्शाते हैं। शब्द "नया जीवन" यूनानी शब्द पालिगेनेसिया (*παλιγγενεσία*) का अनुवाद है, जो नए नियम में केवल दो ही बार पाया जाता है — एक बार मत्ती 19:28 में और एक बार तीतुस 3:5 में। और तीतुस 3:5 ही पवित्रशास्त्र में एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ "नया जीवन" का प्रयोग इस रूप में किया गया है जो मसीह में नए जीवन के आरंभ को दर्शाता है। परंतु इसी अवधारणा का वर्णन अन्य शब्दों में भी किया गया है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 3:3 में हम यूनानी वाक्यांश गिनाओ अनोथेन (*γεννάω ἄνωθεν*), पाते हैं जिसका अनुवाद "नया जन्म" या "नए सिरे से जन्म लेने" के रूप में किया गया है, और 1 पतरस 1:3 में हम यूनानी शब्द अनागेनाओ (*ἀναγεννάω*) को पाते हैं, जिसका अनुवाद अक्सर "नए जन्म" के रूप में किया जाता है। याकूब 1:18 में शब्द अपोकुएओ (*ἀποκυέω*) है, जिसका अर्थ "जन्म देना" या "बाहर लाना" है। और इफिसियों 2:10 शब्द क्टिजो (*κτίζω*) का उपयोग करता है, जिसका अर्थ "रचना करना" है। गलातियों 6:5 में भी नए जीवन की अवधारणा को शब्द काईने क्टिसिस (*καινὴ κτίσις*) या "नई सृष्टि" से और इफिसियों 4:24 में काईनोस आंथरोपोस (*καινός ἄνθρωπος*) या "नए मनुष्य" से दर्शाया गया है।

यद्यपि बहुत से शब्द एकसमान अवधारणा को दर्शाते हैं, फिर भी विधिवत धर्मविज्ञानी इन सब का उल्लेख "नए जीवन" के शीर्षक के अंतर्गत ही करते हैं। इस अवधारणा के लिए अन्यों की अपेक्षा इस बाइबल-आधारित शब्द का चुनाव सरलता और स्पष्टता के लिए किया गया है।

एक अर्थ पर बल देना

बाइबल-आधारित एक शब्द पर दूसरे से अधिक बल देने के अतिरिक्त, विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल-आधारित शब्द के एक अर्थ पर उसके अन्य अर्थों से अधिक बल देने के द्वारा तकनीकी शब्दों की रचना करते हैं।

जैसा कि हम देख चुके हैं, पवित्रशास्त्र के लेखक अक्सर एक ही शब्द का प्रयोग कई भिन्न अर्थों के लिए करते हैं। ऐसी परिस्थिति द्वारा लाए गए असमंजस को दूर करने का एक तरीका जिसका प्रयोग विधिवत धर्मविज्ञानी करते हैं, वह है बाइबल-आधारित एक शब्द के अर्थ पर उसके अन्य अर्थों से अधिक बल देना।

सभी विश्वसनीय विधिवत धर्मविज्ञानी यह जानते हैं कि शब्द डिकायो (*δικαιόω*) का अनुवाद अक्सर "धर्मी ठहराना" या "धर्मी ठहराया जाना" के रूप में किया जाता है, और इसका प्रयोग नए नियम

में भिन्न रूपों में किया जाता है। जैसा कि हमने इस अध्याय में पहले देखा था, यह कम से कम दो भिन्न अवधारणाओं को दर्शाता है। रोमियों 3:28 में यह केवल विश्वास के द्वारा धार्मिकता की आरंभिक घोषणा को दर्शाता है, वहीं याकूब 2:24 में यह कामों के द्वारा विश्वास के प्रमाण या सबूत को दर्शाता है।

कल्पना कीजिए कि क्या होगा यदि विधिवत धर्मविज्ञानी शब्द धर्मी ठहराए जाने का प्रयोग निरंतर रूप से दोनों ही तरीकों में करें। यदि उनसे पूछा जाए, "कैसे एक व्यक्ति धर्मी ठहराया जाता है?" उनमें से एक का कहना शायद यह होगा, "मनुष्य केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है न कि कामों के द्वारा।" पर दूसरा शायद यह कहे, "मनुष्य कामों के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है, न केवल विश्वास के द्वारा।" इस तरह की धर्मविज्ञानी वार्तालाप जल्द ही भ्रामक बन जाएगी।

विधिवत धर्मविज्ञानियों द्वारा इस असमंजस को दूर करने का एक तरीका डिकायो शब्द के बाइबल-आधारित एक अर्थ पर उसके दूसरे अर्थों से अधिक बल देने के द्वारा "धर्मी ठहराए जाने" को धर्मविज्ञानी तकनीकी शब्द में परिवर्तित कर देना है। रोमन कैथोलिक कलीसिया की झूठी शिक्षाओं के प्रत्युत्तर में प्रोटेस्टेंटवादियों ने धर्मी ठहराए जाने की "धार्मिकता की उदघोषणा" के अर्थ पर बल दिया है। धर्मी ठहराया जाना कामों के बिना केवल अनुग्रह से, विश्वास के द्वारा होता है। इसलिए जब पारंपरिक प्रोटेस्टेंटवादियों ने बिना किसी योग्यता के "धर्मी ठहराए" जाने के शब्द का प्रयोग किया, तो उनके कहने का यही अर्थ था।

अतः हम देखते हैं कि विधिवत धर्मविज्ञानी शब्द के एक अर्थ पर उसके दूसरे अर्थों से अधिक बल देने के द्वारा उस असमंजस पर विजय प्राप्त कर लेते है जो बाइबल के शब्दों के भिन्न अर्थों से उत्पन्न होता है। यह चुनाव तब उस अभिव्यक्ति को तकनीकी धर्मविज्ञानी शब्द होने का महत्व प्रदान करता है।

एक शब्द या एक अर्थ पर अधिक बल देने के अतिरिक्त विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल-आधारित शब्दों के लिए नए अर्थों की रचना करने के द्वारा बाइबल-आधारित भाषा से तकनीकी शब्दों की रचना भी करते हैं। दूसरे शब्दों में, वे बाइबल-आधारित शब्दों का प्रयोग ऐसे करते हैं जैसे बाइबल में कभी नहीं किए गए।

नए अर्थों की रचना करना

बाइबल-आधारित शब्दों के लिए नए अर्थों की रचना करने का एक जाना पहचाना उदाहरण तकनीकी धर्मविज्ञानी अभिव्यक्ति "अनुग्रह की वाचा" का है। इस वाक्यांश का प्रयोग पारंपरिक प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान में परमेश्वर के उसके लोगों के साथ संबंध को दर्शाने के लिए किया गया है, न केवल नए नियम में बल्कि संपूर्ण बाइबल के इतिहास में, अर्थात् पाप में पतन होने के समय से लेकर मसीह के महिमा में पुनरागमन के समय तक। यह एक ऐसी विस्तृत अवधारणा है जिसमें पाप में पतन होने के बाद की सभी ईश्वरीय वाचाएँ सम्मिलित हैं, जैसे परमेश्वर की नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद और मसीह के साथ बाँधी गई वाचाएँ। सुनिए किस प्रकार विश्वास का वेस्टमिंस्टर अंगीकरण अध्याय 7 के भाग 3 में अनुग्रह की वाचा का वर्णन करता है :

> मनुष्य ने अपने पतन के द्वारा स्वयं को कामों की वाचा के आधार पर जीवन के लिए अयोग्य ठहरा दिया; परंतु प्रभु उस दूसरी वाचा बाँधने में प्रसन्न हुआ, जिसे सामान्यतः अनुग्रह की वाचा कहा जाता है, जिसके द्वारा वह पापियों को यीशु मसीह के द्वारा मुफ्त में जीवन और उद्धार प्रदान करता है।

ध्यान दें कि अंगीकरण यह सुझाव नहीं देता कि शब्द-समूह "अनुग्रह की वाचा" बाइबल में पाया जाता है। अब यह स्पष्ट है कि शब्द "वाचा" और "अनुग्रह" बाइबल-आधारित शब्द हैं, परंतु वे पवित्रशास्त्र में इस तकनीकी अर्थ के साथ एक दूसरे के साथ जुड़कर प्रकट नहीं होते। फलस्वरूप, अंगीकरण कहता है कि इस वाचाई प्रबंध को "सामान्यतः अनुग्रह की वाचा" कहा जाता है। पिता और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पुत्र परमेश्वर के बीच का वह संबंध जो बाइबल के संपूर्ण इतिहास में प्रकट होता रहता है, उसे सामान्यतः धर्मविज्ञानियों के द्वारा इस रूप में कहा जाता है, परंतु बाइबल के द्वारा नहीं। विधिवत धर्मविज्ञानियों ने बाइबल आधारित अभिव्यक्ति का नए तरीकों में प्रयोग करने के द्वारा इस तकनीकी शब्द की रचना की है। यह निश्चित है कि इस शब्दावली "अनुग्रह की वाचा" के द्वारा व्यक्त अवधारणा बाइबल-आधारित अवधारणा है। बाइबल में परमेश्वर के बचाने वाले संपूर्ण कार्य में एकता है, और यह एकता अनुग्रहकारी और वाचाई है। परंतु पवित्रशास्त्र में इस व्यापक अवधारणा के लिए कोई एक शब्द नहीं है, इसलिए विधिवत धर्मविज्ञानियों ने इसकी अभिव्यक्ति के लिए इस तकनीकी शब्द की रचना की है।

अतः हम देखते हैं कि धर्मविज्ञानी बाइबल-आधारित भाषा का कम से कम तीन तरीकों से प्रयोग करते हुए तकनीकी शब्दों की रचना करते हैं : वे किसी एक अवधारणा के लिए किसी एक बाइबल-आधारित शब्द पर दूसरों से अधिक बल देते हैं; वे बाइबल के किसी एक शब्द के अर्थ पर उसके दूसरे अर्थों से अधिक बल देते हैं; और वे बाइबल-आधारित शब्दों को नया अर्थ प्रदान करते हैं। इन माध्यमों के द्वारा विधिवत धर्मविज्ञानी मसीही विश्वास के उनके विचार-विमर्श की स्पष्टता को सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं।

अब जबकि हमने यह देख लिया है कि विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल-आधारित भाषा का प्रयोग करते हुए किस प्रकार तकनीकी शब्दों की रचना करते हैं, इसलिए हमें विधिवत धर्मविज्ञान में विशेष शब्दावली की रचना के दूसरे मुख्य तरीके की ओर मुड़ना चाहिए। विधिवत धर्मविज्ञानी पवित्रशास्त्र से बाहर के स्रोतों से भी अपनी शब्दावली लेते हैं।

बाइबल से बाहर की भाषा

हमें सदैव यह याद रखना चाहिए कि महान आदेश को पूरा करने के लिए मसीही धर्मविज्ञानियों को यह सीखना आवश्यक है कि विभिन्न संस्कृतियों में जहाँ परमेश्वर ने उन्हें रखा है वहाँ मसीही शिक्षाओं को कैसे सिखाया जाए। इसीलिए धर्माध्यक्षीय धर्मविज्ञानियों ने अक्सर स्वयं को नीओ-प्लेटोवादी शब्दावली में व्यक्त किया,और इसीलिए विद्वतावादियों ने अक्सर स्वयं को अरस्तूवादी शब्दावली में व्यक्त किया। प्रोटेस्टेंटवादी विधिवत धर्मविज्ञानियों ने भी बाइबल से बाहर के शब्दों का प्रयोग करते हुए निरंतर मसीह की आज्ञा का अनुसरण किया है, उन्होंने आरंभिक समयों की शब्दावली और अपनी समकालीन संस्कृतियों से लिए शब्दों का प्रयोग करते हुए ऐसा किया है।

ऐसे बहुत से तरीके हैं जिनमें बाइबल से बाहर के शब्द विधिवत धर्मविज्ञान में प्रकट होते हैं, परंतु तीन मुख्य दृष्टिकोणों के विषय में सोचना हमारे लिए सहायक होगा। पहला, विधिवत धर्मविज्ञानी उस सामान्य शब्दावली को अपनाते हैं जो उनके लिए उपलब्ध होती है। दूसरा, विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल से बाहर के दर्शनशास्त्रीय और धार्मिक शब्दों को नए अर्थ प्रदान करते हैं। तीसरा, वे अक्सर बाइबल से बाहर की शब्दावली को बाइबल-आधारित अभिव्यक्तियों के साथ जोड़ देते हैं। सबसे पहले इस पर ध्यान दें कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञानी बातों को कहने के उन सामान्य तरीकों का प्रयोग करते हैं जो बाइबल से बाहर के हैं।

सामान्य शब्दावली

विधिवत धर्मविज्ञानी जब पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं को स्पष्ट करते हैं तो उनके द्वारा बाइबल से बाहर की शब्दावली से शब्दों को लेने का शायद सबसे सरल तरीका उनकी संस्कृतियों की सामान्य शब्दावली को अपनाने का है। धर्माध्यक्षीय समय में शब्दों और वाक्यों का यह समूह व्यापक रूप से यूनानी भाषा से आया जो उस समय के भूमध्यसागरीय संसार में मसीही विद्वानों की प्राथमिक भाषा थी। मध्यकालीन समय में मसीही विद्वानों की प्राथमिक भाषा लैटिन हो गई थी। आधुनिक समय में मसीहियों ने

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

ऐसी संस्कृतियों की विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है जिनमें मसीहियत ने विशेष स्थान बनाया है।

बाइबल से बाहर की सामान्य शब्दावली का प्रयोग करने का एक सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण शब्द "त्रिएकता" है। शब्द "त्रिएकता" सबसे पहले सन् 180 के लगभग प्रकट हुआ जब अंतकिया के थियुफिलुस ने यूनानी शब्द ट्रिआस (*τρίας*) का प्रयोग परमेश्वरत्व के त्रिएक होने के वर्णन के लिए किया। इस शब्द का बाद में लैटिन में ट्रिनिटास के रूप अनुवाद किया गया, जिसका अर्थ है "त्रय"। शब्द त्रिएकता बाइबल में कभी प्रकट नहीं होता। न ही यह एक तकनीकी, दर्शनशास्त्रीय या धार्मिक अभिव्यक्ति का शब्द था। यह एक सरल सा शब्द था जिसे तीन के सामान्य शब्द से बनाया गया था। अंततः बाइबल से बाहर का यह शब्द एक ऐसा शीर्षक बन गया जिसके अंतर्गत धर्मविज्ञानियों ने इस तथ्य को अभिव्यक्त किया कि पवित्रशास्त्र कई बार परमेश्वर को तीन और कई बार एक के रूप में दर्शाता है। जैसा कि सन् 381 में कोंसटैंटीनोपल की प्रथम परिषद के बिशप ने लिखा :

> पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का एकीय परमेश्वरत्व, सामर्थ्य और तत्व है, उनका एक ऐसा गौरव है जो एक जैसे सम्मान, और समान अनंत प्रभुत्व के योग्य है, वे तीन सबसे सिद्ध सारतत्वों, या तीन सिद्ध व्यक्तित्वों में हैं।

अतीत और वर्तमान में, कलीसिया ने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के संबंधों के बारे में कई झूठी शिक्षाओं का सामना किया है। सरल शब्दों में कहें तो कुछ समूहों ने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के एकत्व पर आवश्यकता से अधिक बल देने का प्रयास किया है, तो अन्यों ने उनकी भिन्नता पर आवश्यकता से अधिक बल दिया है।

परमेश्वरत्व की विविधता और एकता पर पवित्रशास्त्र की संपूर्ण शिक्षा को दर्शाने के लिए कट्टरवादी मसीही बाइबल से बाहर की अभिव्यक्ति "त्रिएकता" का प्रयोग एक तकनीकी शब्द के रूप में यह संकेत देने के लिए करते हैं कि परमेश्वर "तीन सिद्ध व्यक्तित्व" तो है, परंतु "सामर्थ्य और तत्व में एक" ही है। बाइबल से बाहर के इस शब्द का प्रयोग उन विषयों में स्पष्टता लाने में सहायता करता है जिनका हम अध्ययन करते हैं। परमेश्वर त्रिएकता है।

दूसरा, विधिवत धर्मविज्ञानी गैरमसीही दर्शनशास्त्रीय और धार्मिक विचार-विमर्शों में प्रयोग की जाने वाली बाइबल से बाहर की शब्दावली के लिए नए अर्थों की रचना भी करते हैं। वे इन शब्दों को अपनाते हैं और इनके अर्थों में संशोधन कर देते हैं ताकि वे मसीही शिक्षा के अनुरूप हों और उसे स्पष्ट करें।

दर्शनशास्त्रीय शब्दावली

सुसमाचारिक मसीही विश्वासी अक्सर तब आपत्ति करते हैं, जब उन्हें महसूस होता है कि विधिवत धर्मविज्ञान में बहुत से शब्द बाइबल से बाहर के धार्मिक और दर्शनशास्त्रीय स्रोतों से आए हैं। इसलिए हमें यहाँ रूककर एक-दो टिप्पणियाँ देनी चाहिए। हमारा डर उचित है कि धर्मविज्ञानी ऐसे शब्द का प्रयोग करने के द्वारा भटकाए जा सकते हैं, जो बाइबल में नहीं पाया जाता। वास्तव में हमें सदैव मसीही धर्मविज्ञान में झूठे गैरमसीही विचारों के घुस आने के विरुद्ध सचेत रहना आवश्यक है। परंतु इसके साथ-साथ जब तक विधिवत धर्मविज्ञानी पवित्रशास्त्र को अपने परम सर्वोच्च न्यायी के रूप में बनाए रखते हैं, तो बाइबल से बाहर की धार्मिक और दर्शनशास्त्रीय अभिव्यक्तियाँ बहुत सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

बाइबल के एक चरित्र का उदाहरण जो ठीक ऐसा ही करता है, प्रेरितों के काम 17 में पाया जाता है। यह एक जाना-पहचाना अनुच्छेद है जहाँ पौलुस ने एथेंस में अरियुपगुस की भीड़ को संबोधित किया था। अपने संबोधन में एक स्थान पर पौलुस ने सकारात्मक रूप से यूनानी कवियों को उद्धृत किया था। सुनिए प्रेरितों के काम 17:28-29 में उसने क्या कहा :

> जैसा तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, "हम तो उसी के वंशज हैं।" अत: परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व सोने या रूपे या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों (प्रेरितों के काम 17:28-29)।

ये अभिव्यक्ति "हम तो उसी के वंशज हैं" का प्रयोग पहले दो यूनानी कवियों, क्लीनथेस और अरातुस, के द्वारा भिन्न-भिन्न समयों में किया गया था। परंतु पौलुस ने बड़े आत्मविश्वास के साथ इस ग़ैरयहूदी अभिव्यक्ति को अपनी अभिव्यक्ति के रूप में ले लिया और पद 29 में यह कहा : "इसलिए क्योंकि हम तो परमेश्वर के वंशज... हैं।" अब, क्लीनथेश और अरातुस ने वास्तव में यूनानी देवताओं के मुखिया ज्यूस का उल्लेख किया था, न कि बाइबल के परमेश्वर का। परंतु पौलुस ने इन यूनानी कवियों की शब्दावली को एक विशिष्ट मसीही अर्थ दिया, और इस बात पर बल दिया कि वह मसीही परमेश्वर था, जिसने मनुष्यजाति की सृष्टि की थी, न कि ज्यूस।

पौलुस के उदाहरण का अनुसरण करते हुए विधिवत धर्मविज्ञानी यदि बाइबल-आधारित अवधारणाओं को दर्शाने के लिए उन्हें पुनः परिभाषित करें तो वे भी कभी-कभी गैरमसीही धार्मिक और दर्शनशास्त्रीय शब्दावली को ले सकते हैं।

एक महत्वपूर्ण समय में जब यह घटित हुआ तो वह मसीह की धर्मशिक्षा "मसीहशास्त्र" के इर्द-गिर्द था। सन् 451 में चाल्सीदोन की परिषद में मसीह की शिक्षा पर हुए विवाद के प्रति कलीसिया के प्रत्युत्तर को सुनिए। वहाँ हम यह पढ़ते हैं कि :

> [मसीह] सच्चा परमेश्वर और सच्चा मनुष्य है..., बिना किसी असमंजस के, बिना किसी परिवर्तन के, बिना किसी विभाजन के, बिना किसी अलगाव के दो स्वभावों में पहचाना गया है; स्वभावों की यह विशिष्टता किसी भी तरह से एकता के कारण निरस्त नहीं होती, बल्कि प्रत्येक स्वाभाव की विशेषताओं को संरक्षित रखा गया है और वे एक साथ मिलकर एक व्यक्तित्व और तत्व की रचना करते हैं, न कि दो व्यक्तित्वों में विभाजित या अलग-अलग तत्वों की।

यह कथन मसीह का ऐसे शब्दों में वर्णन करता है जो बाइबल की शब्दावली से भिन्न हैं। परिषद ने बाइबल से बाहर के स्रोतों से इन्हें प्राप्त किया और मसीह के स्वभावों के बारे में बताया। परिषद ने यह भी कहा कि मसीह के स्वभाव "बिना किसी असमंजस के" भिन्न हैं, यह भी कि वे "बिना किसी परिवर्तन के" हैं और एक दूसरे के द्वारा बदले नहीं जाते हैं, परंतु वे फिर भी "बिना किसी विभाजन, बिना किसी अलगाव" के मसीह में "एक व्यक्तित्व" के रूप में एकता में अटूट रूप से जुड़े हुए हैं। सच्चाई तो यह है कि शब्द "व्यक्तित्व," जैसा कि इस संदर्भ में प्रयोग किया है, शायद उस समय की ऐसी वैधानिक शब्दावली से लिया गया हो जिसमें एक "व्यक्तित्व" व्यक्तिगत पहचान का एक कानूनी शब्द था।

तकनीकी भाषा पवित्रशास्त्र से निकल कर नहीं आई, परंतु यह पवित्रशास्त्र के प्रति सच्ची थी। और यह सटीकता के साथ मसीह के बारे में कलीसिया की धर्मशिक्षा को बताने के लिए आवश्यक थी।

तीसरा, विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल-आधारित और बाइबल से बाहर के शब्दों को अपनी तकनीकी धर्मविज्ञानी शब्दावली की रचना करने के लिए आपस में जोड़ भी देते हैं।

संयोजित शब्दावली

इस तरह का संयोजन कई भिन्न तरीकों से होता है, कुछ दूसरों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण होते हैं, परंतु इसका एक स्पष्ट उदाहरण पवित्रीकरण की धर्मशिक्षा में पाया जा सकता है। जैसा कि हम इस अध्याय में देख चुके हैं, शब्द पवित्रीकरण का प्रयोग नए नियम में भिन्न तरीकों से हुआ है। शब्द के इन

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रयोगों ने पवित्रीकरण शब्द, जो कि बाइबल से आता है, को उन विशेषणों के साथ संयोजित करने का अवसर उत्पन्न किया है जो बाइबल में से नहीं हैं। पहले खंड में हमने देखा है कि 1 कुरिन्थियों 6:11 में क्रियाहागिआज़ो (*ἁγιάζω*) उस परिवर्तन को दर्शाती है जो कि एक व्यक्ति में तब आता है जब वह मसीह में पहली बार विश्वास करता है। दूसरे खंड में, हमने देखा है कि 1 थिस्सलुनीकियों 4:3 क्रिया हागिआज़ो का प्रयोग पवित्रता के उस निरंतर होने वाले विकास के लिए करता है जिसका अनुभव मसीहियों को उनके दिन-प्रतिदिन के जीवन में करना है।

विधिवत धर्मविज्ञानियों ने पवित्रीकरण के विभिन्न प्रकारों के बारे में बोलने के द्वारा पवित्रीकरण की धर्मशिक्षा के प्रति स्पष्टता को प्रकट किया है। वे एक व्यक्ति के द्वारा पहले-पहल विश्वास करने पर हुए पवित्रीकरण को "स्थाई पवित्रीकरण" कहते हैं, इसमें वे बाइबल-आधारित शब्द "पवित्रीकरण" के साथ बाइबल से बाहर के शब्द "स्थाई" को यह दर्शाने के लिए जोड़ देते हैं कि इस प्रकार का पवित्रीकरण सदैव के लिए एक ही बार होता है, और यह एक व्यक्ति को पवित्रता की दशा, अर्थात् संसार से अलगाव और परमेश्वर के प्रति पवित्र होने की ओर ले जाता है। शब्द "प्रगतिशील पवित्रीकरण" का प्रयोग पवित्रता में बढ़ते रहने के निरंतर प्रगतिशील अनुभव, संसार से अलग होने और परमेश्वर के प्रति पवित्रता में बढ़ने को दर्शाने के लिए किया जाता है। इस विषय में शब्द "पवित्रीकरण" बाइबल से आता है, परंतु शब्द "प्रगितशील" बाइबल के बाहर से आता है। जैसे कि आप कल्पना कर सकते हैं कि ये संयोजित तकनीकी शब्द बहुत अधिक उपयोगी हो सकते हैं। पवित्रीकरण के बारे में केवल बोलने की अपेक्षा, इस तरह की योग्यताएँ यह स्पष्ट करने में सहायता करती हैं कि धर्मविज्ञानियों के कहने का क्या अर्थ है। वे पवित्रशास्त्र में "पवित्रीकरण" शब्द के विभिन्न प्रयोगों में भिन्नता करने के लिए उनकी सहायता करती हैं।

अतः हम देखते हैं कि विधिवत धर्मविज्ञानी दो मूलभूत रूपों में तकनीकी शब्दों की रचना करते हैं। वे पवित्रशास्त्र से लेते हैं, और वे बाइबल के बाहर से इन्हें लेते हैं। इन माध्यमों के द्वारा धर्मविज्ञानी ऐसे शब्दों को प्रदान करते हैं जो उनके विचर-विमर्शों को स्पष्ट करते हैं और विधिवत धर्मविज्ञान के निर्माण के लिए मूल खंडों के रूप में कार्य करते हैं।

अब क्योंकि हमने विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्दों के प्रति एक सामान्य दिशा-निर्धारण को देख लिया है, और यह भी देख लिया है कि वे उनकी रचना कैसे करते हैं, इसलिए हमें अपने तीसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए : तकनीकी शब्दों के मूल्य और खतरे।

मूल्य और खतरे

विधिवत धर्मविज्ञान में पाए जाने वाले विशेष शब्दों और वाक्यों के द्वारा किन लाभों और हानियों को प्रस्तुत किया जाता है? हमारे अध्याय के इस समय तक मैं आश्वस्त हूँ कि तकनीकी शब्दों के इस पूरे विषय के बारे में आपमें से कइयों में भिन्न-भिन्न भावनाएँ होंगी। शायद आपमें से कुछ उनके बारे में जितना ज्यादा हो सके उतना सीखने के लिए तैयार हों, और वहीं अन्य लोग इससे चकित हों कि क्या इतनी जटिल बातों को सीखने में इतनी परेशानियाँ उठाना उचित है भी या नहीं। जैसा कि हम देखेंगे, यह महत्वपूर्ण है कि इस बात को न तो आवश्यकता से अधिक और न ही आवश्यकता से कम महत्व दिया जाना चाहिए कि विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी भाषा हमारी सहायता कैसे कर सकती है। एक संतुलित दृष्टिकोण सकारात्मक और नकारात्मक दोनों होगा क्योंकि तकनीकी शब्द महत्वपूर्ण लाभों या हानियों को प्रस्तुत करते हैं।

इस विषय पर और खोज करने के लिए हम विधिवत प्रक्रियाओं की विशेष शब्दावली को देखेंगे जब यह मसीही धर्मविज्ञान के निर्माण करने के लिए तीन मुख्य स्रोतों से संबंधित है। दूसरे अध्यायों में

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हमने यह सुझाव दिया है कि परमेश्वर ने मसीहियों को विशेष और सामान्य प्रकाशन से सीखने के तीन मुख्य तरीके प्रदान किए हैं। हम पवित्रशास्त्र की सावधानी से की गई ऐसी व्याख्या से विशेष प्रकाशन की समझ प्राप्त करते हैं, जो मसीही धर्मविज्ञान के निर्माण का महत्वपूर्ण स्रोत है। इसके साथ-साथ, परमेश्वर ने हमें दो अन्य स्रोतों पर ध्यान देने के द्वारा सामान्य प्रकाशन से लाभ लेने के लिए भी बुलाया है। हम दूसरे लोगों, विशेषकर मसीहियों से सीखने के द्वारा सामान्य प्रकाशन के एक पहलू पर ध्यान केंद्रित करते हैं। और हम मसीही जीवन और मसीह के लिए जीने के हमारे व्यक्तिगत अनुभव पर ध्यान देने के द्वारा सामान्य प्रकाशन के एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जब हम अपने व्यक्तिगत पवित्रीकरण में बढ़ने का प्रयास करते हैं।

क्योंकि ये स्रोत किसी भी दिए गए विषय पर हमें जानकारी प्रदान करते हैं इसलिए इनकी खोज करना एक उत्तरदायी मसीही धर्मविज्ञान का निर्माण करने में हमारी सहायता करता है। व्याख्या के साक्षियों के रूप में समुदाय में सहभागिता और मसीही जीवन किसी एक विशेष विषय पर सामंजस्यपूर्ण और महत्वपूर्ण होते हैं, तो उस विषय के लिए हमारी दृढ़ता और भरोसे का स्तर सामान्य रूप से बढ़ जाना चाहिए। परंतु जब ये साक्षियाँ असामंजस्यपूर्ण और कम महत्वपूर्ण होती हैं तो किसी दिए गए विषय पर हमारी दृढ़ता और भरोसे के स्तर सामान्यतः निम्न हो जाने चाहिए। जब हम मसीही धर्मविज्ञान का निर्माण करते हैं तो ये परस्पर निर्भर रहने वाले स्रोत, व्याख्या, समुदाय में सहभागिता और मसीही जीवन, हमारी असंख्य रूपों में सहायता करते हैं।

क्योंकि ये स्रोत बहुत ही महत्वपूर्ण हैं, इसलिए हम विधिवत प्रक्रियाओं में इनमें से प्रत्येक शब्द के आधार पर तकनीकी शब्दों के मूल्य और खतरों की खोज करेंगे। हम सबसे पहले तकनीकी शब्दों और मसीही जीवन को देखेंगे; दूसरा, हम समुदाय की सहभागिता के संबंध में तकनीकी शब्दों की खोज करेंगे; और तीसरा हम पवित्रशास्त्र की व्याख्या के संबंध में उनकी जाँच करेंगे। आइए, सर्वप्रथम हम मसीही जीवन के धर्मविज्ञानी स्रोत को देखें।

मसीही जीवन

आपको पिछले अध्याय से याद होगा कि मसीही जीवन व्यक्तिगत पवित्रीकरण की प्रक्रिया है। व्यक्तिगत पवित्रीकरण कम से कम तीन स्तरों पर होना चाहिए : वैचारिक, व्यावहारिक और भावनात्मक स्तर। या जैसा कि हमने बताया है, पवित्रीकरण में सही विचार (ओर्थोडोक्सी), सही आचरण (ओर्थोप्राक्सिस) और करूणाभाव (ओर्थोपाथोस) का विकास सम्मिलित है। अब मसीही जीवन के ये तीनों पहलू परस्पर निर्भर रहते हैं, और परस्पर आदान-प्रदान के असंख्य जालों की रचना करते हैं। सही सोच—या ओर्थोडोक्सी —हमारे व्यवहार (ओर्थोप्राक्सिस) और भावनाओं (ओर्थोपाथोस) को प्रभावित करती है। हमारे व्यवहार (ओर्थोप्राक्सिस) उस तरीके को प्रभावित करते हैं जिनमें हम विषयों पर विचार-विमर्श (ओर्थोडोक्सी) करते हैं, और हम उनके बारे में कैसे महसूस (ओर्थोपाथोस) करते हैं। और निस्संदेह हमारी भावनाएँ (ओर्थोपाथोस) इस बात को गहराई से प्रभावित करती हैं कि हम कैसा व्यवहार करते हैं (ओर्थोप्राक्सिस) और कैसे सोचते हैं (ओर्थोडोक्सी) हैं।

समय हमें अनुमति नहीं देगा कि हम उन सभी तरीकों की खोज करें जिनमें तकनीकी शब्द इस अंतरक्रिया में टकराते हैं। इसलिए, हम उस एक-एक मुख्य तरीके तक ही सीमित रहेंगे जिसमें वे मसीही जीवन का विकास कर सकते हैं और रूकावट बन सकते हैं। आइए पहले उस एक तरीके को देखें जिसमें विधिवत धर्मविज्ञान की विशेष शब्दावली मसीह के लिए जीने में एक सकारात्मक उन्नति बन सकती है।

वृद्धि

मसीही जीवन में तकनीकी शब्दों को सीखने का एक सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि वे बाइबल की जटिल शिक्षाओं के सरल विवरणों के रूप में कार्य करते हैं। पहले पहल विधिवत धर्मविज्ञान में पाई

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जाने वाली विशेष अभिव्यक्तियों की सूची भयभीत करने वाली हो सकती है। उनकी संख्या बहुत अधिक है और उन्हें याद रखना बहुत कठिन प्रतीत होता है। परंतु कुछ समय के बाद तकनीकी शब्द वास्तव में बातों को सरल रूप से समझाने में बहुत अधिक लाभदायक होते हैं। हम तकनीकी शब्द के त्वरित उल्लेख के साथ बाइबल की जटिल शिक्षाओं को याद कर सकते हैं और तब हमारे सोच-विचार, व्यवहार और भावनाओं पर उन्हें लागू कर सकते हैं।

एक क्षण के लिए ऐसे व्यक्ति की कल्पना करें जिसके पास विधिवत धर्मविज्ञान की शब्दावली का ज्यादा ज्ञान न हो। उदाहरण के लिए, चाहे यह चकित करने वाला भी क्यों न हो, नए विश्वासियों ने अक्सर मुझसे यह पूछा है, "क्या यीशु परमेश्वर है या परमेश्वर का पुत्र?" यह समझना कठिन नहीं है कि लोग इसके बारे में असमंजस में क्यों पड़ जाते हैं। जब वे बाइबल को तकनीकी शब्दों की समझ के बिना पढ़ते हैं, तो उनके पास कोई ऐसी अवधारणा उपलब्ध नहीं होती जो उनकी सहायता कर सके। वे बाइबल के एक अनुच्छेद को पढ़ते हैं और वह ऐसा कहता प्रतीत होता है कि यीशु परमेश्वर है। तब वे किसी दूसरे अनुच्छेद को पढ़ते हैं और वह ऐसा कहता प्रतीत होता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है जो स्वयं को परमेश्वर के अधीन कर देता है।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि विश्वासी अक्सर असमंजस में पड़ जाते हैं जब बात इस तरह के व्यावहारिक प्रश्नों की आती है : "मुझे किससे प्रार्थना करनी चाहिए, यीशु से या परमेश्वर से? यदि यीशु ने हमें पिता से प्रार्थना करना सिखाया है तो फिर बहुत से मसीही यीशु से प्रार्थना क्यों करते हैं?" ऐसे ही, "यदि यीशु ने हमें पिता से प्रार्थना करना सिखाया है तो हम पवित्र आत्मा की स्तुति के गीत क्यों गाते हैं?"

उसको ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने के लिए बहुत अधिक समय और प्रयास की आवश्यकता होगी जिसके पास तकनीकी धर्मविज्ञानी भाषा की कोई पृष्ठभूमि न हो। उन्हें बाइबल के असँख्य अनुच्छेदों को खोजना होगा और उनको किसी प्रभावशाली अर्थ में एकसाथ रखना होगा। यह कार्य इतना जटिल है कि बहुत से नए विश्वासी हार मान लेंगे और वैसा ही करेंगे जैसा वे दूसरों को करता हुआ देखते हैं।

परंतु एक क्षण के लिए उन विश्वासियों की कल्पना कीजिए जो विधिवत धर्मविज्ञान की तकनीकी शब्दावली को जानते हैं। यदि वे सोचें, "क्या यीशु परमेश्वर है या परमेश्वर का पुत्र?" या यदि वे सोचें, "क्या मुझे पिता से या पुत्र से या आत्मा से प्रार्थना करनी चाहिए?" तो उनके प्रश्नों का उत्तर देना बहुत ही आसान होगा। सच्चाई तो यह है कि मसीही विश्वासी जो विधिवत प्रक्रियाओं में तकनीकी शब्दावली से अवगत हैं, वे सामान्यतः ऐसे प्रश्न उठाते ही नहीं क्योंकि इनका उत्तर बहुत ही सरल तकनीकी शब्द में दिया जा सकता है : और वह है त्रिएकता। यदि कोई इस शब्द के अर्थ से अवगत है तो ऐसे कई प्रश्नों के उत्तर उसी समय मिल जाएंगे, और हम लगभग स्वाभाविक रूप से पारंपरिक उत्तर को व्यवहार (ओर्थोप्राक्सिस) और भावनाओं (ओर्थोपाथोस) पर लागू कर सकते हैं। जटिल विषयों को सरल बनाने और उन्हें याद करने की क्षमता एक ऐसी बड़ी उन्नति है जो तकनीकी शब्दावली हमारे मसीही जीवन को प्रदान करती है।

यद्यपि विधिवत धर्मविज्ञान की विशेष शब्दावली मसीही जीवन में कई तरीकों से उन्नति कर सकती है, फिर भी हमें इस बात के प्रति भी जागरूक रहना चाहिए कि यह हमारे पवित्रीकरण में रुकावटें भी प्रस्तुत कर सकती है।

रूकावट

जैसा कि मैंने स्वयं को और दूसरों को विधिवत धर्मविज्ञान की तकनीकी अभिव्यक्तियों के साथ बहुत अधिक परिचित होते देखा है, तो उसमें एक हानि बार-बार दिखाई देती है। विधिवत प्रक्रियाओं की विशेष शब्दावली को जानना आत्मिक घमंड की ओर ले जा सकता है। यह विशेषकर धर्मविज्ञान के युवा विद्यार्थियों के साथ विशेष रूप से होता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

समस्या अक्सर ऐसे उठ खड़ी होती है। धर्मविज्ञान के विद्यार्थी धर्मविज्ञान के तकनीकी शब्दों को सीखने के लिए बौद्धिक क्षमता को खर्च करते हैं और वे उन्हें उनके प्रयोग को बहुत सुविधाजनक पाते हैं। परंतु इसके साथ-साथ, अधिकांश साधारण लोगों के पास इस तरह के विवरणों को सीखने की क्षमता, समय और रूचि नहीं होती। और अक्सर धर्मविज्ञान के विद्यार्थी स्वयं को उनसे बेहतर समझना आरंभ कर देते हैं जिनके पास विधिवत प्रक्रियाओं की तकनीकी शब्दावली नहीं होती। वे घमंड से इतना ज्यादा भर जाते हैं कि यह मानने लग जाते हैं कि अधिक शब्दावली का अर्थ है अधिक पवित्रीकरण। परंतु ऐसा बिल्कुल नहीं होता।

जैसा कि हमने कहा है, मसीही जीवन में विकास, अर्थात् व्यक्तिगत पवित्रीकरण में वृद्धि, हमारे विचारों को पवित्रशास्त्र से अभिपुष्ट करने से ही नहीं आता। अपने विश्वास पर कार्य करना और अपने विश्वास में उचित अहसास भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। सच्चाई तो यह है कि अधिकांश विश्वासी विधिवत धर्मविज्ञान की तकनीकी शब्दावली को जानने पर अनुग्रह में विकास करते जाते हैं। हम फिर भी पवित्रशास्त्र को सीख सकते हैं और ऐसे ज्ञान के बिना भी उसे अपने प्रतिदिन के जीवन में लागू कर सकते हैं।

जीवन के अनुभव जैसे सताव, दुःख और बीमारी अक्सर तकनीकी शब्दावली को सीखने के बौद्धिक अभ्यास की अपेक्षा एक व्यक्ति के पवित्रीकरण को कहीं अधिक बढ़ाते हैं। अतः विधिवत धर्मविज्ञान में प्रकट विशेष शब्दों और वाक्यों के साथ परिचित होना जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही अधिक हमें इसमें भी जागरूक होना चाहिए कि वे हमारे मसीही जीवन में वास्तव में रूकावट भी बन सकते हैं यदि हम उन्हें आत्मिक घमंड की ओर अगुवाई करने की अनुमति देते हैं, अर्थात् ऐसे भाव की ओर कि हम मसीह में केवल इसलिए परिपक्व हैं क्योंकि हमने विशेष शब्दावली को सीख लिया है।

तकनीकी शब्द कैसे मसीही जीवन में लाभ और हानि ला सकते हैं, को समझने के अतिरिक्त हमें इसके प्रति भी जागरूक होना चाहिए कि वे समुदाय में हमारी सहभागिता पर कैसे प्रभाव डालते हैं।

समुदाय में सहभागिता

समुदाय में परस्पर सहभागिता मसीही धर्मविज्ञान के निर्माण का एक मुख्य स्रोत है, क्योंकि यह हमारी उस सहायता पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता करती है जो मसीह की देह हमें प्रदान करती है। हम मसीही समुदाय में परस्पर सहभागिता के लिए तीन महत्वपूर्ण आयामों की बात कर सकते हैं : मसीही धरोहर, वर्तमान मसीही समुदाय और व्यक्तिगत निर्णय। मसीही धरोहर अतीत की कलीसिया में पवित्र आत्मा के कार्य की साक्षी को प्रस्तुत करती है। हम वह सीखते हैं जो उसने हमारे आत्मिक पूर्वजों को सिखाया था। हमारा वर्तमान मसीही समुदाय आज के मसीहियों के जीवन की साक्षी प्रस्तुत करता है, अर्थात् वह जो पवित्र आत्मा हमारे चारों ओर के अन्य विश्वासियों को सीखा रहा है। हमारे व्यक्तिगत निर्णय ऐसे विषयों पर हमारे व्यक्तिगत निष्कर्षों या बोधों को प्रस्तुत करता है, जिन्हें हम पवित्र आत्मा की व्यक्तिगत अगुवाई में दूसरों के साथ हमारी सहभागिता के दौरान सामने लाते हैं। समुदाय के ये आयाम एक दूसरे के साथ भिन्न-भिन्न तरीकों से व्यवहार करते हैं, साथ ही परस्पर आदान-प्रदान के असँख्य जालों का निर्माण करते हैं। हमारी धरोहर हमारे वर्तमान समुदाय और व्यक्तिगत निर्णयों को जानकारी प्रदान करती है। हमारा वर्तमान समुदाय हमारी धरोहर के साथ मध्यस्थता करता है और हमारे व्यक्तिगत निर्णयों को प्रभावित करता है। और हमारे व्यक्तिगत निर्णय हमारी धरोहर के प्रभावों और वर्तमान समुदायों की भी मध्यस्थता करते हैं।

परस्पर सहभागिता के इन मूलभूत तत्वों को ध्यान में रखते हुए हमें कुछ ऐसे तरीकों की खोज करनी चाहिए जिनमें विधिवत धर्मविज्ञान की विशेष शब्दावली समुदाय की परस्पर सहभागिता में वृद्धि या

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

रूकावट का कारण बन सकती है। आइए सबसे पहले हम उस एक महत्वपूर्ण तरीके को देखें जिसमें तकनीकी शब्द समुदाय में परस्पर सहभागिता में वृद्धि कर सकते हैं।

वृद्धि

एक महानतम तरीका जिसमें तकनीकी शब्द सामुदायिक वार्तालाप में वृद्धि कर सकते हैं उसे एक शब्द में सारगर्भित किया जा सकता है : सम्प्रेषण या वार्तालाप। जब विश्वासी उन विशेष अभिव्यक्तियों को जान लेते हैं और उनका प्रयोग कर पाते हैं, जिन्हें विधिवत धर्मविज्ञानियों ने विकसित किया है, तो वे एक दूसरे से अधिक प्रभावशाली रूप में वार्तालाप कर सकते हैं।

एक ओर, जब हम विधिवत प्रक्रियाओं की भाषा को जान लेते हैं तो हम अपनी मसीही धरोहर के साथ बहुत प्रभावशाली रूप में परस्पर सहभागिता कर सकते हैं। अधिकाँश धर्मविज्ञानी कार्य, टीका, विश्वासवचन, अंगीकार, और अतीत के अन्य धर्मविज्ञानी लेख मसीही धारणाओं को सारगर्भित करने के रूप में तकनीकी शब्दों का अक्सर प्रयोग करते हैं। और विशेष रूप से, विधिवत धर्मविज्ञान बातों को व्यक्त करने के इन पारंपरिक तरीकों से गहराई से संबंधित है। अतः विधिवत प्रक्रियाओं के तकनीकी शब्द हमारी बहुत सहायता करते हैं जब हम अतीत के मसीही विश्वासियों से सहभागिता करते है।

उदाहरण के लिए, यदि आप यह जानने में रूचि रखते हैं कि ऑगस्टीन, अक्विनॉस, लूथर या कॉल्विन जैसे कलीसियाई धर्माध्यक्षों ने क्या शिक्षा दी, तो आप बहुत लाभ प्राप्त कर सकते हैं, यदि आप पारंपरिक तकनीकी शब्द से परिचित हैं। यह बात निश्चित है कि बहुत से शब्द इन लोगों के दिनों के बाद बनाए गए हैं, परंतु तब भी तकनीकी शब्द हमें उनके लेखन कार्यों के साथ संबंध स्थापित करने के तरीके बताते हैं ताकि हम उससे लाभ प्राप्त कर सकें जो परमेश्वर ने उन्हें सिखाया था।

दूसरी ओर, हमारे वर्तमान समुदायों के साथ परस्पर सहभागिता भी काफी बढ़ सकती है यदि हम और वे जो हमारे चारों ओर हैं एक जैसी धर्मविज्ञानी शब्दावली को रखें।

अगली बार जब आप किसी कक्षा या कलीसियाई सम्मलेन में हों तो सावधानी से उन तरीकों को सुनें जिनमें आपके सह-विश्वासी एक दूसरे के साथ धर्मविज्ञान के बारे में बातचीत करते हैं। यह जल्द ही स्पष्ट हो जाएगा कि अच्छा वार्तालाप तब होता है जब सहभागी उन शब्दों के अर्थों पर सहमत होते हैं जिनका वे प्रयोग कर रहे होते हैं। जब वे सहमत नहीं होते, तो उनका वार्तालाप टूट जाता है।

क्या यह अच्छा नहीं है कि अधिकांश प्रोटेस्टेंटवादी शब्द "पवित्रीकरण" का प्रयोग "केवल विश्वास के द्वारा पवित्रीकरण" के लिए ही करते हैं? क्या आप वार्तालाप में समस्याओं की कल्पना कर सकते हैं, यदि हमें शब्द पवित्रीकरण का प्रयोग भिन्न-भिन्न तरीकों में करना पड़े? क्या यह अच्छा नहीं है कि जब हम "पवित्रीकरण" के बारे में बोलते हैं तो यह जान सकते हैं कि हम क्या बात कर रहे हैं? क्या यह सकारात्मक नहीं है कि हम "मसीह की दीनता" और "मसीह के ऊँचे पर उठाए जाने" के बारे में बिना यह पूछे बात कर सकते हैं कि हमारे कहने का अर्थ क्या है? जितना अधिक हम तकनीकी शब्दों को जानते और साझा करते हैं, उतना अधिक हम एक दूसरे के साथ प्रभावशाली तरीके से वार्तालाप कर सकते हैं।

यद्यपि यह सत्य है कि विधिवत प्रक्रियाओं की विशेष शब्दावली इन और अन्य तरीकों में हमारी परस्पर सहभागिता में उन्नति कर सकती है, फिर भी ऐसा भी हो सकता है कि यह समुदाय में परस्पर सहभागिता में रुकावट भी बने।

रूकावट

विधिवत धर्मविज्ञान में कई विशेष अभिव्यक्तियाँ पुरानी हो गई हैं और वर्तमान में अच्छे वार्तालाप में सहायक नहीं है। इनमें से कुछ तो धर्माध्यक्षीय और मध्यकालीन समयों की हैं। अन्य कई अभिव्यक्तियां कई सदियों पुरानी हैं। यद्यपि इन तकनीकी शब्दों की रचना उस समय वार्तालाप में सहायता

करने के लिए की गई थी, परंतु अब वे इतनी पुरानी हो गई हैं कि आज वार्तालाप में सहायता नहीं कर सकतीं। फलस्वरूप, हम इन पुराने शब्दों को सीख सकते हैं, परंतु हममें से बहुत से इन्हें नहीं सीखेंगे, और इससे समुदाय की परस्पर सहभागिता बहुत सीमित हो जाएगी।

जब मैं द्वि-तत्ववादी एकता की धर्मशिक्षा, अर्थात् मसीह के एकल व्यक्तित्व में मसीह के ईश्वरीय और मानवीय स्वभावों की एकता को स्पष्ट करता हूँ तो मैंने इस समस्या का सामना अक्सर किया है। कितने लोग इस शब्द "द्वि-तत्ववाद" के अर्थ को जानते होंगे? हम ये सोच सकते हैं कि हम शब्द "स्वभाव" और "व्यक्तित्व" के अर्थ को जानते हैं, परंतु इन शब्दों का हमारा आज का अर्थ प्राचीन मसीहियों के अर्थ से बहुत अलग है।

अतः जब हम विधिवत धर्मविज्ञान की तकनीकी शब्दावली से परिचित होते हैं तो हमें यह पहचानने में सावधान रहना चाहिए कि यह समुदाय के भीतर वार्तालाप में रूकावट भी बन सकती है।

तकनीकी शब्दों के मसीही जीवन और समुदाय में सहभागिता के साथ संबंध रखने के कुछ तरीकों को देख लेने के बाद अब हमें अपने तीसरे मुख्य धर्मविज्ञानी स्रोत की ओर मुड़ना चाहिए : पवित्रशास्त्र की व्याख्या। विधिवत प्रक्रियाओं के विशेष शब्द और वाक्यांश किस प्रकार बाइबल की हमारी व्याख्या को प्रभावित करते हैं?

पवित्रशास्त्र की व्याख्या

संपूर्ण मसीही धर्मविज्ञान के निर्माण के लिए व्याख्या अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पवित्रशास्त्र में दिए हुए परमेश्वर के विशेष प्रकाशन की ओर हमारी सबसे अधिक प्रत्यक्ष पहुँच हैं। एक अन्य अध्याय में हमने सुझाव दिया है कि उन तीन तरीकों के विषय में सोचना सहायक होगा जिनमें पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने में कलीसिया की अगुवाई की है। हमने इन व्यापक श्रेणियों को साहित्यिक विश्लेषण, ऐतिहासिक विश्लेषण और विषयात्मक विश्लेषण कहा है। पहला, साहित्यिक विश्लेषण पवित्रशास्त्र को एक चित्र या कलात्मक प्रस्तुति के रूप में देखता है, जिसकी रचना विशिष्ट साहित्यिक विशेषताओं के माध्यम से उनके मूल पाठकों को प्रभावित करने के लिए मानवीय लेखकों द्वारा दैवीय प्रेरणा के द्वारा की गई है। दूसरा, ऐतिहासिक विश्लेषण पवित्रशास्त्र को इतिहास की ओर एक खिड़की के रूप में देखता है, जो ऐसी प्राचीन एतिहासिक घटनाओं को देखने और सीखने का तरीका है जिन्हें पवित्रशास्त्र त्रुटिरहित रूप से दर्शाता है। और तीसरा, विषयात्मक विश्लेषण पवित्रशास्त्र को एक दर्पण की तरह देखता है, जो हमारी रूचि के प्रश्नों और विषयों पर मनन करने का एक तरीका है। हर बार जब हम पवित्रशास्त्र की व्याख्या करते हैं तो हम इन तीनों तरह के विश्लेषणों का किसी न किसी तरह प्रयोग करते हैं, क्योंकि ये एक दूसरे पर परस्पर बहुत निर्भर होते हैं। वे भी परस्पर आदान-प्रदान के जालों का निर्माण करते हैं। फिर भी, किसी एक समय में हम अपनी आवश्यकताओं और उद्देश्यों पर आधारित होकर किसी एक तरीके को दूसरे से अधिक महत्व दे सकते हैं।

विधिवत धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र के विषयात्मक दृष्टिकोणों को किसी अन्य व्याख्यात्मक विधि से अधिक प्रयोग करता है। विधिवत धर्मविज्ञानी यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि बाइबल उन विषयों के बारे में क्या शिक्षा देती है जिनमें उनकी विशेष रूचि होती है। दूसरे शब्दों में, विधिवत धर्मविज्ञानी पवित्रशास्त्र को विशेष धर्मशिक्षाओं से संबंधित प्रश्नों के साथ देखते हैं।

वे ऐसे प्रश्नों को पूछते हैं जैसे, "बाइबल परमेश्वर के बारे में क्या कहती है?" "मनुष्य के बारे में यह क्या कहती है?" "उद्धार के बारे में यह क्या कहती है?" वे अपने प्रश्नों के बाइबल आधारित उत्तरों को प्राप्त करने के लिए पवित्रशास्त्र को खोजते हैं और इस अनुच्छेद या उस अनुच्छेद से जानकारी को एकत्र करते हैं। इस प्रक्रिया में जिस एक बड़ी चुनौती का सामना विधिवत धर्मविज्ञानी करते हैं वह यह है कि यह कैसे निर्धारित किया जाए कि पवित्रशास्त्र का कौन सा अनुच्छेद उनके प्रश्नों पर टिप्पणी करता

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

है। “क्या यह अनुच्छेद इस धर्मशिक्षा को संबोधित करता है?” “क्या यह अनुच्छेद इस या उस विषय पर बोलता है?” कई बार इस या उस अनुच्छेद का चुनाव करना स्पष्ट होता है, परंतु बहुत बार यह उतना स्पष्ट नहीं होता है। और विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्दावली इस पूरी प्रक्रिया में एक जटिल कार्य है।

यह समझने के लिए कि यह ऐसा कैसे है, हमें याद रखना आवश्यक है कि पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले शब्दों और अवधारणाओं के बीच संबंध बहुत जटिल हैं। अन्य बातों के साथ-साथ बाइबल के बहुत से शब्द एक ही अवधारणा को दर्शा सकते हैं। और एक शब्द कई अवधारणाओं को दर्शा सकता है। पवित्रशास्त्र में ये अनेक संबंध एक स्थान से दूसरे स्थान पर भिन्न-भिन्न होते हैं और कई बार ये काफी भ्रमित करने वाले होते हैं। परंतु विधिवत धर्मविज्ञानियों ने ऐसी अस्पष्टताओं को दूर करने के लिए तकनीकी शब्दावली को विकसित किया है। उन्होंने ऐसे शब्दों की रचना की है जो कि विशेष रूप से परिभाषित किए गए हैं जिनका उद्देश्य केवल एक ही धर्मविज्ञानी अवधारणा को व्यक्त करने का होता है। इस भाव में, विधिवत धर्मविज्ञान में शब्दों और अवधारणाओं के बीच व्यक्तिगत संबंध होता है।

अब बाइबल में विधिवत धर्मविज्ञान में शब्दों और अवधारणाओं के बीच की यह भिन्नता एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवलोकन की ओर अगुवाई करती है। शब्दावली के स्तर पर विधिवत धर्मविज्ञानी शब्दावली-संबंधी स्वतंत्रता का प्रयोग करते हैं। वे अपनी धर्मविज्ञानी अभिव्यक्तियों को बाइबल की अभिव्यक्तियों के अनुरूप बनाने का प्रयास नहीं करते। इसकी अपेक्षा, विधिवत वैज्ञानिक बाइबल आधारित शब्दों का प्रयोग अपने ही रूपों मे करते हैं। वे बाइबल से बाहर के शब्दों का प्रयोग करते हैं और यहाँ तक कि बाइबल-आधारित और बाइबल से बाहर के शब्दों को जोड़ भी देते हैं।

इसके साथ-साथ, अवधारणाओं के स्तर पर, मजबूत विधिवत धर्मविज्ञानी सदैव पवित्रशास्त्र से वैचारिक अनुरूपता को खोजने का प्रयास करते हैं। वे ऐसे विचारों को समझने और उन्हें अपनी शब्दावली में स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं जिनकी शिक्षा बाइबल देती है। यद्यपि वे अपनी शब्दावली में स्वतंत्रता का प्रयोग करते हैं, फिर भी विधिवत धर्मविज्ञानियों का लक्ष्य वैचारिक अनुरूपता होता है।

यह मूलभूत भिन्नता हमारी यह देखने में सहायता करती है कि विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्द पवित्रशास्त्र की हमारी व्याख्या में वृद्धि भी कर सकते हैं और रूकावट उत्पन्न भी कर सकते हैं। सारांश में, जब शब्दावली-संबंधी स्वतंत्रता और वैचारिक अनुरूपता के बीच की भिन्नताओं को ध्यान में रखा जाता है, तो विशेष विषयों के लिए सही अनुच्छेदों को चुनने की हमारी क्षमता में काफी वृद्धि हो सकती है। परंतु जब इसे भूला दिया जाता है तो सही चुनाव करने की हमारी क्षमता में काफी रूकावट उत्पन्न हो सकती है। आइए सबसे पहले हम उस तरीके के बारे में सोचें जिसमें विधिवत धर्मविज्ञान में शब्दावली-संबंधी स्वतंत्रता और वैचारिक अनुरूपता को समझना व्याख्या करने में हमारी सहायता कर सकता है।

वृद्धि

दुर्भाग्य से, पवित्रशास्त्र के कई व्याख्याकार अक्सर एक ऐसे रूप में कार्य करते हैं जिसका वर्णन बहुत अधिक प्रतिबंधात्मक रूप में किया जा सकता है। वे गलत रूप में अनुमान लगाते हैं कि पवित्रशास्त्र का कोई अनुच्छेद एक ऐसे धर्मविज्ञानी अवधारणा के बारे में तभी बोलता है यदि वह अनुच्छेद उस तकनीकी शब्द का प्रयोग करता है जिनकी पहचान वे उस विषय के साथ करते हैं। यदि उनका विशेष धर्मविज्ञानी शब्द, अक्सर विधिवत धर्मविज्ञान की कोई तकनीकी अभिव्यक्ति, उस अनुच्छेद में प्रकट नहीं होता तो वे गलत तरीके से उस अनुच्छेद को अपने विचार-विमर्श से बाहर कर देते हैं।

वास्तविकता में, विधिवत धर्मविज्ञानियों को, जब वे पवित्रशास्त्र की खोज करते हैं, तो बहुत अधिक प्रतिबंधात्मक नहीं बल्कि उचित रूप से चयनात्मक होना चाहिए। वे ऐसा कर सकते हैं जब वे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यह याद रखते हैं कि बाइबल के लेखक सब प्रकार के शब्दों के साथ विषयों को व्यक्त करते हैं। बाइबल के लेखक अक्सर किसी विषय या अवधारणा पर टिप्पणी करते हैं, तब भी जब उनकी अभिव्यक्तियाँ विधिवत धर्मविज्ञान के तकनीकी शब्दों से मेल नहीं खाते। इस कारण जब विधिवत धर्मविज्ञानी किसी विषय पर जानकारी प्राप्त करने के लिए पवित्रशास्त्र की ओर मुड़ते हैं तो उन्हें सावधान रहना चाहिए कि वे कुछ शब्दों को ढूँढते हुए कहीं बहुत अधिक प्रतिबंधात्मक न हो जाएं। इसकी अपेक्षा उन्हें ऐसे अनुच्छेदों की खोज करनी चाहिए जिनमें प्रासंगिक अवधारणाएँ हों।

उदाहरण के लिए, इस अध्याय में हमने देखा है कि पवित्रशास्त्र बहुत से शब्दों का प्रयोग नवजीवन की अवधारणा या धर्मशिक्षा का वर्णन करने के लिए करता है। एक व्यक्ति का आत्मिक मृत्यु से मसीह में जीवन के आरंभिक परिवर्तन को केवल तीतुस 3:5 में "नया जीवन" कहा गया है। परंतु यदि विधिवत धर्मविज्ञानी स्वयं को केवल इस एक ही अनुच्छेद तक प्रतिबंधित करें क्योंकि उनके तकनीकी शब्द का प्रयोग कहीं और नहीं हुआ, तो वे पवित्रशास्त्र की व्याख्या से इस विषय के बारे में कुछ ज्यादा नहीं सीख पाएँगे। एक व्यक्ति की मृत्यु से मसीह में जीवन के आरंभिक परिवर्तन के विषय पर बाइबल की शिक्षा शब्द नवजीवन तक ही सीमित नहीं है। पवित्रशास्त्र "नए मनुष्य," "नए सिरे से जन्म," "नया जन्म" और ऐसी कई अन्य अभिव्यक्तियों के प्रयोग के द्वारा इसी धर्मविज्ञानी धर्मशिक्षा के बारे में बात करता है। "नए मनुष्य" की अभिव्यक्ति वाले अनुच्छेदों को एक अलग धर्मशिक्षा के रूप में सूचीबद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। और "नए सिरे से जन्म" या "नए जन्म" की अभिव्यक्तियों के पदों को भी एक अलग धर्मशिक्षा के रूप में सूचीबद्ध करने की आवश्यकता नहीं होती। वे सब एक समान धर्मविज्ञानी विषय के लिए बोलते हैं। वास्तव में कई ऐसे अनुच्छेद हैं जो इस विषय या अवधारणा के बारे में बिना किसी विशेष शब्द या वाक्यांश का प्रयोग किए बिना भी बात करते हैं। जब विधिवत धर्मविज्ञानी यह याद रखते हैं कि वे शब्दावली-संबंधी स्वतंत्रता का प्रयोग करते हैं और केवल पवित्रशास्त्र के साथ वैचारिक अनुरूपता को खोजते हैं तो वे सब प्रकार के अनुच्छेदों से नवजीवन के बारे में सीख सकते हैं। वे और भी अधिक व्यापक हो सकते हैं जब वे उसकी खोज करते हैं जिसे पवित्रशास्त्र आरंभिक परिवर्तन की अवधारणा के बारे में सिखाता है, फिर चाहे बाइबल में इसे कैसे भी व्यक्त किया गया हो।

रूकावट

जहाँ यह सच है कि शब्दावली-संबंधी स्वतंत्रता और विधिवत धर्मविज्ञान की वैचारिक अनुरूपता को ध्यान में रखने से हमारी व्याख्या में उन्नति हो सकती है, वहीं इस सच्चाई को भूल जाना पवित्रशास्त्र की हमारी व्याख्या में रुकावट भी उत्पन्न कर सकता है। कई ऐसे तरीके हैं जिनमें यह सच है, परंतु एक सबसे आम तरीका जिसमें तकनीकी शब्द व्याख्या में रुकावट बन सकते हैं, वह यह है जिसे "अति-सामान्यीकरण" कहा जा सकता है।

"अति-सामान्यीकरण" विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्दों के द्वारा व्याख्या के सामने लाई गई सबसे प्रचलित समस्या है। यह अक्सर दो तरीकों से प्रकट होती है : जब विद्यार्थी विधिवत प्रक्रियाओं में विशेष शब्दों को सीखते हैं और उन्हें काफी सहायक पाते हैं, तो वे अक्सर अपनी तकनीकी परिभाषाओं को पवित्रशास्त्र में हर स्थान पर पाई जाने वाली अभिव्यक्तियों को देखना आरंभ कर देते हैं। वे गलत रूप से अनुमान लगाते हैं कि प्रत्येक अनुच्छेद जहाँ एक शब्द प्रकट होता है, वह एकसमान धर्मविज्ञानी विषय या धर्मशिक्षा को संबोधित करता है।

परंतु जब हम याद रखते हैं कि विधिवत धर्मविज्ञानी शब्दावली-संबंधी स्वतंत्रता का प्रयोग करते हैं और वैचारिक अनुरूपता की खोज करते हैं तो हम "अति-सामान्यीकरण" से बच सकते हैं और उपयुक्त चुनाव कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, हम पवित्रशास्त्र के उन भागों का चुनाव करने के लिए बेहतर रूप से तैयार होंगे जो वास्तव में हमारे मन के विषय या धर्मशिक्षा को संबोधित करते हैं।

उदाहरण के लिए उसे देखें जिसे हमने इस अध्याय में "धर्मी ठहराए जाने" के विषय में कहा है। पारंपरिक प्रोटेस्टेंट विधिवत धर्मविज्ञान में शब्द "धर्मी ठहराया जाना" धार्मिकता की आरंभिक घोषणा की अवधारणा को दर्शाता है, जो कार्यों के द्वारा नहीं बल्कि विश्वास के माध्यम से तब मिलती है, जब एक व्यक्ति में उसके विश्वास के कारण मसीह की धार्मिकता रोपित की जाती है। अब धर्मी ठहराए जाने की यह तकनीकी परिभाषा विधिवत धर्मविज्ञान में इतनी महत्वपूर्ण है कि यह यह अपेक्षा करना सरल है कि प्रत्येक शब्द "धर्मी ठहराए जाने," या डिकायो को अपने में रखने वाला प्रत्येक पद इसी धर्मशिक्षा को दर्शाता है। अतः व्याख्याकार या तो धर्मी ठहराए जाने के अपने तकनीकी अर्थ को ऐसे अनुच्छेदों पर थोप देते हैं जहाँ उसका यह अर्थ नहीं होता, या फिर वे धर्मी ठहराए जाने की पारंपरिक धर्मशिक्षा को ऐसे बदल देते हैं कि गलत रूप से चुने हुए अनुच्छेदों को समायोजित कर सकें। हमने देखा है कि याकूब 2:24 शब्द "धर्मी ठहराए जाने" या डिकायो का प्रयोग एक ऐसे रूप में करता है जो कि पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान से अलग है। दुर्भाग्यवश, कुछ धर्मविज्ञानियों ने यह सोचा है कि क्योंकि शब्द "धर्मी ठहराया जाना" इस अनुच्छेद में ही प्रकट होता है इसलिए यह विधिवत धर्मविज्ञान में धर्मी ठहराए जाने की धर्मशिक्षा को संबोधित करता है। और परिणामस्वरूप, वे धर्मी ठहराए जाने की धर्मशिक्षा को पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले इस शब्द के कई प्रयोगों से भ्रमित कर देते हैं।

परंतु हमें याकूब को केवल मौखिक स्तर की अपेक्षा वैचारिक स्तर पर समझना चाहिए। क्योंकि शब्द "धर्मी ठहराया जाना" इस या किसी और अनुच्छेद में प्रकट होता है, तो इसका अर्थ यह नहीं कि इसे धर्मी ठहराए जाने की विधिवत धर्मविज्ञानी धर्मशिक्षा को प्रभावित करने की अनुमति दी जानी चाहिए।

क्योंकि विधिवत धर्मविज्ञानी शब्दावली-संबंधी स्वतंत्रता का प्रयोग करते हैं और पवित्रशास्त्र के प्रति केवल वैचारिक अनुरूपता को खोजते हैं, इसलिए हमें सावधान रहना चाहिए कि हम पवित्रशास्त्र में शब्दों के विविध प्रयोग को कभी शिथिल न करें। इसे शिथिल करना हमारी व्याख्या को बहुत अधिक बाधित कर देगा।

अतः विधिवत धर्मविज्ञान में ये तकनीकी शब्द ही हैं जो सभी तीनों धर्मविज्ञानी स्रोतों के हमारे प्रयोग में वृद्धि या रूकावट उत्पन्न कर सकते हैं। तकनीकी शब्द मसीही जीवन, समुदाय में परस्पर सहभागिता और पवित्रशास्त्र की व्याख्या के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, परंतु इसके साथ-साथ जब हम इन मुख्य धर्मविज्ञानी स्रोतों का प्रयोग करते हैं तो वे ऐसे खतरे भी प्रस्तुत करते हैं जिनसे बचा जाना चाहिए।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने विधिवत धर्मविज्ञान के तकनीकी शब्दों के कई आयामों की खोज की है। हमने इस ओर एक दिशा-निर्धारण को प्राप्त किया कि वे क्या हैं और वे कैसे विधिवत धर्मविज्ञान की पूरी प्रक्रिया के भीतर उपयुक्त बैठते हैं। हमने विधिवत धर्मविज्ञानियों को देखा है कि वे कैसे अपने विशेष या तकनीकी शब्दों का निर्माण करते हैं। और हमने ऐसे कुछ मूल्यों और खतरों को भी देखा है जिन्हें तकनीकी शब्द प्रस्तुत करते हैं।

जब हम विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करने की इस श्रृंखला को निरंतर जारी रखते हैं, तो हम उसकी प्रासंगिकता को देखेंगे जो हमने बहुत बार तकनीकी शब्दों के बारे में सीखा है। विधिवत प्रक्रियाओं की विशेष शब्दावली को सीखना और यह सीखना कि उनका बुद्धिमानी से कैसे प्रयोग करना है, एक धर्मविज्ञानी द्वारा किया जा सकने वाला सबसे सहायक कार्य हो सकता है। इन विषयों पर एक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मजबूत पकड़ रखने के द्वारा हम एक ऐसे विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण कर सकते हैं जो परमेश्वर को आदर देगा और कलीसिया को बढ़ाएगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।